



नारी सशक्तिकरण की प्रतीक बनेंगी राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू : दादी रतनमोहिनी राष्ट्रपति बनने पर संस्थान में खुशी, भेजा बधाई संदेश



नई दिल्ली। देश की पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की जीत से ब्रह्माकुमारी संस्थान में खुशी का माहौल है। संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने बधाई दी। दादी ने कहा कि यह बेहद खुशी की बात है कि एक ऐसी महिला देश की राष्ट्रपति बनी हैं जिनकी आध्यात्मिक जीवनशैली, सकारात्मक सोच और श्रेष्ठ व्यक्तित्व है। वो देश के नागरिकों को प्रेरित तो करेंगी ही साथ ही देश में महिला सशक्तिकरण को मजबूती प्रदान करेंगी। मैं उनकी जीत पर संस्थान के समस्त भाई-बहनों की ओर से शुभकामनाएं और बधाई देती हूँ। ब्रह्माकुमारी के ओम शांति

रिट्रीट सेंटर गुरुग्राम की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, ब्रह्माकुमारी ओडिशा के मीडिया कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. नथमल, दिल्ली वसंत विहार सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. क्षीरा बहन, ब्र.कु. लीना बहन तथा ब्र.कु. विकास समेत कई लोगों ने बधाई दी व माउण्ट आबू आने का निमंत्रण दिया। गौरतलब है कि द्रौपदी मुर्मू ब्रह्माकुमारी संस्थान से सन् 2009 से जुड़ी हुई हैं। उनका जीवन संघर्षों से भरा रहा है। पर ऐसे में उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा अपने आप को सम्भाला और इस मुकाम पर पहुंचीं। देश की साधारण एक महिला किंतु उनका व्यक्तित्व, उनके विचार असाधारण हैं।

सम्मेलन : ब्रह्माकुमारी के शांतिवन में त्रिदिवसीय न्यायविदों के समागम में जुटे देशभर के प्रतिनिधि

परमात्मा का सानिध्य हो जाने से सबका होगा न्याय

शांतिवन। मध्य प्रदेश हाईकोर्ट की न्यायाधीश सुनीता यादव ने कहा कि जब हम न्यायिक प्रक्रिया के तहत होते हैं तो उस समय सही दिशा और सत्य न्याय की आवश्यकता होती है। परमात्मा का सानिध्य सही रूप में यदि हो जाए तो हर किसी के साथ सही न्याय होगा। परमात्मा का दरबार और स्थूल लोक का कोर्ट दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। उक्त उद्गार न्यायाधीश ने ब्रह्माकुमारी संस्थान के शांतिवन परिसर में आयोजित न्यायविदों के सम्मेलन में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि कई बार ऐसा होता है कि कई केस बहुत ही उलझे हुए होते हैं, ऐसे में कई बार लोगों की उम्मीदों के खिलाफ न्यायिक प्रक्रिया होती है। परंतु न्यायिक व्यवस्था संविधान के नियम-कायदों से ही चलती है। इसलिए इन पहलुओं का ध्यान रखना जरूरी होता है। उन्होंने आगे कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान का राजयोग ध्यान मनुष्य के जीवन में तरक्की का रास्ता खोलता है। इसलिए हमें

जीवन में राजयोग को अपनाने का प्रयास करना चाहिए। संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी ने कहा कि मेरा मानना है कि सच्चा न्यायविद् होने के लिए हमारे अंदर दया का भाव, क्षमा का भाव और सत्यता की शक्ति होनी चाहिए तभी हम समाज में और समाज के लिए सही निर्णय दे सकते हैं। गुजरात हाईकोर्ट के न्यायाधीश ए.जे. देसाई ने कहा

कि हर एक को सुख शांति प्रेम से रहने का अधिकार है, अपनी बात रखने का अधिकार है, खुशी का इज्जत करने का अधिकार है, अपने संस्कार और धर्म के हिसाब से जीने का अधिकार है। ओडिशा हाईकोर्ट के जज एस. पुजारी ने कहा कि जहाँ नारियों को सम्मान और न्याय मिलता है वहाँ देवता निवास करते हैं। गीता में भगवान कहते हैं

जब-जब धर्म की ग्लानि होती है तो मैं इस धरती पर अवतरित होकर अधर्म का विनाश कर सभी के साथ न्याय करता हूँ। मध्य प्रदेश हाईकोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश बी.डी. राठी ने कहा कि न्याय हर किसी की मांग, चाहना और आवश्यकता है। सम्मेलन में न्यायविद् प्रभाग के अध्यक्ष



ब्रह्माकुमारी का राजयोग मनुष्य के जीवन में तरक्की का रास्ता खोलता है: न्यायाधीश सुनीता यादव

जहाँ नारियों को सम्मान और न्याय मिलता है वहाँ देवता निवास करते हैं : न्यायाधीश एस. पुजारी

बी.एल. माहेश्वरी ने कहा कि आध्यात्मिकता से ही मनुष्य जीवन का उत्थान होता है। सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ वकील पद्मश्री रोमेश गौतम, प्रभाग की उपाध्यक्ष ब्र.कु. पुष्पा बहन, महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. शारदा बहन व प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. लता बहन ने अपने बहुमूल्य विचार सभी के समक्ष रखे।



ब्रह्माकुमारी सकारात्मक ऊर्जा का केन्द्र : भाजपा अध्यक्ष नड्डा

शांतिवन-आबू रोड। ब्रह्माकुमारी संस्थान के विशाल डायमण्ड हॉल में आयोजित कार्यक्रम में शामिल होकर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा ने कहा कि आज मुझे अत्यंत खुशी है कि इस संस्थान के मुख्यालय में आने का अवसर मुझे मिला। मैं ब्रह्माकुमारी के ज्ञानसरोवर भी गया। मैं यहाँ दस वर्ष पहले भी आया था, उसके बाद कई बार आने का सौभाग्य मिला। इस दौरान उन्होंने कई पुरानी बातों को याद करते हुए कहा कि यहाँ से मेरे जीवन में जो परिवर्तन हुआ, उसका सुखद अनुभव मिला। बीजेपी अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के

रहा है। संस्थान ने वृक्षारोपण के कार्यक्रम में लाखों वृक्ष लगाए हैं। मैं संस्थान का आभारी हूँ कि मुझे यहां आने का मौका देते हैं। यहां से ऊर्जा लेकर मैं आगे पार्टी में उस ऊर्जा का संचार करता हूँ। उन्होंने आयोजकों का धन्यवाद करते हुए कहा कि पार्टी के ट्रेनिंग कैम्प में इतनी बड़ी संख्या में पदाधिकारी आए, जिन्हें राजयोग को जानने का मौका मिला। इसके तहत सबके मन में सात्विकता आए, सद्भाव आए, समाज के विकास में हम सब

- शांतिवन पहुंचने पर हुआ भव्य स्वागत व सम्मान
- राजयोग मन और तन को करता है मजबूत

के विकास में हम सब जुड़ें, भारत उसमें महत्वपूर्ण भूमिका अदा करे और विश्व में शांति के लिए भारत योगदान दे। इस कार्यक्रम को संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन भाई, कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, ब्र.कु. शारदा बहन व ब्र.कु. प्रकाश भाई ने भी सम्बोधित किया। इस दौरान बीजेपी के प्रदेश प्रभारी अरुण सिंह, प्रदेश अध्यक्ष सतीश पुनिया, नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया, संगठन मंत्री चंद्रशेखर, राष्ट्रीय प्रवक्ता व सांसद राज्यवर्धन सिंह राठौड़, सांसद देवजी पटेल, श्रीमति मल्लिका नड्डा, बीजेपी कार्यकर्ता समेत बड़ी संख्या में गणमान्य लोग मौजूद रहे।

समय है... फरिश्ते बन विचरण करें...

समय के साथ बहुत कुछ बदला हुआ अब स्वीकार करना ही पड़ेगा। और लोगों ने स्वीकार कर भी लिया है। मनुष्य के जीवन में कुछ चीजें ऐसी उतर गई हैं कि वह विरोध कर ही नहीं रहा। जैसे- शराब, भ्रष्टाचार, लीव इन रिलेशनशिप, हिंसा, बीमारी के इलाज के नाम पर लूट। डॉक्टर जब पर्चा लिखता है तो कभी-कभी तो लगता है कि ये सब गलत है, पर सब झेल रहे हैं। कुल मिलाकर कहें तो बहुत कुछ गलत धीरे-धीरे सही मान लिया गया। ऐसे में निजी रूप से अपने चरित्र को बचाना चाहिए। आज हम हैं, कल हम भी नहीं रहेंगे। हमारी राख पर कितने ही लोग गुजर जायेंगे। हमारी चिता बुझेगी, उससे पहले दूसरे मुर्दे तैयार हो जायेंगे। फिर छोड़कर क्या जायेंगे! विश्वास कीजिए, छूटेगा तो सिर्फ चरित्र। सद्चरित्र से किये हुए कार्य याद किये जायेंगे। हालांकि कृत्य तो बुरे भी याद किये जाते हैं, पर वे नीचे संसार में ही स्मरण रहेंगे। यदि पीछे अच्छे कार्य छोड़ गये तो संसार के लोगों को तो याद रहेंगे ही, संसार बनाने वाला भी याद रखेगा।

जबकि हम सभी को मालूम है कि हमें एक दिन जाना है। हम बहुत भाग्यशाली हैं कि हमें कैसे जाना है, ये ज्ञान का प्रकाश व ज्ञान देने वाला दाता भी हमारे साथ है। इस समय पर हमारा दायित्व है कि हम संसार में ऐसे रहें जैसे कि फरिश्ते। फरिश्ते की मुख्यतः

कवालिटीज हैं कि वे स्वयं हल्के होंगे व उनके संपर्क में आने वालों को भी हल्का कर देंगे। माना कि वे दूसरों को एक तरह से देते हैं। जो आज संसार की हालत है उसमें उनका कृत्य देने का होगा। दूसरा, वे परमात्मा का संदेश भी देंगे व उनके द्वारा सौंपे हुए कार्य

को निष्ठापूर्वक करेंगे। उन्हें कभी भी मान, अपमान, अभिमान, निंदा, स्तुति, घृणा, नफरत, ईर्ष्या स्पर्श भी नहीं करेंगी। वे जैसे सिर्फ कठपुतली की तरह ही इस धरा पर हैं, नचाने वाला नचा रहा है। कार्य पूरा हुआ और वे डिटेच। शरीर में रहेंगे भी ऐसे जैसे कि शरीर रूपी कमरे में प्रवेश करके कार्य किया और उपराम। वे सदा रूहानी रूहाब में रहेंगे। अतीन्द्रिय सुख की अनुभूतियों में डूबे रहेंगे। कछुए की तरह परमात्मा द्वारा दिए हुए कार्य को किया और सर्व कर्मन्द्रियों को समेट लिया। न उसके प्रभाव में और न आकर्षण में आएंगे। 'मैं और मेरापन' के जर्मस उनको छुएंगे भी नहीं। निमित्तपन का भान भी उन्हें नहीं रहेगा। कहते हैं ना, जैसे कि कर्मातीत। कर्म के लेप-छेप से परे। समय की मांग है, ऐसा फरिश्ता जो दूसरों का दुःख, कष्ट हर ले और सत्य पथ पर चलने का मार्ग दिखाकर सभी को सुकून का एहसास कराए। तो हम सभी ऐसे कार्य के लिए ही यहाँ हैं। बेशक यहाँ पर चुनौतियाँ भी हैं, तो अवसर भी। क्योंकि हमारे साथ सबसे बड़ी उपलब्धि है स्वयं परमात्मा का साथ। जो दुनिया की कल्पना से भी परे है। बस इस अवसर का लाभ लेकर अपनी तकदीर की लकीर को जितना चाहे लम्बी खींच लें।

वर्तमान समय हमारे मन की शक्तियों को उस पर फोकस कर दें जिससे कि मन तृप्त हो जाये। कई बार होता है कि ये होना चाहिए, ये करना चाहिए, ऐसा सोचना चाहिए, पर समय पर जैसा होना चाहिए वैसा नहीं होता, अब ये शिकायत न रहे। लेकिन जो होना चाहिए वही हो, वैसा ही हो और उसी समय पर हो, ये आत्मविश्वास एवं संतुष्टता हमें महसूस होनी चाहिए। क्योंकि सर्वशक्तिवान अपना सर्वस्व लुटा रहा है, तो हम उसका सम्पूर्ण लाभ लें। तपस्या हमें यही करनी है। हमारे मन की शक्तियाँ शत प्रतिशत उस श्रेष्ठ कार्य पर ही केन्द्रित हों। कहीं पर भी भटकाव, अटकाव व व्यर्थ में क्षीण न होती हो, ये हमें ध्यान रखना है। इसी देह में हमें फरिश्ता बनकर रहना है और अगले कदम में देवता के रूप में इस धरा पर आना है। इसी को ही तो कहते हैं, बाप और वरसे को याद कर, अतीन्द्रिय सुख में रह उड़ते रहें। ऐसे अपने को तपाकर चौबीस कैरेट सोने की तरह स्थिति बनाकर यहाँ विचरण करना है। है ना! ऐसा कर्तव्य करें जो जाने के बाद भी हमारे कर्तव्य जिंदा रहें, जो अनेकों को राह दिखाकर उनकी जिन्दगी में सुकून लाये। ये सब तब होगा, जिनके बारे में आज विचार किया, जब वही लक्षण जीवन में होंगे। ऐसे सद्जीवन की सुगंध सदियों तक इस धरती पर बिखरती रहेगी। तो आप अपनी मनोस्थिति को ऐसी बनाने के लिए अपने आप को तैयार करें। ब्राह्मण तो हम हैं ही, अब सो फरिश्ता सो देवता बनना है। बस अब ये परमात्मा के महावाक्य कानों में गुंजते रहें और नजारे दिखते रहें।



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

हम त्रिकालदर्शी हैं तो क्यों का क्वेश्चन उठ सकता है क्या? तीनों कालों को जानते हैं और वर्तमान को ही नहीं समझ रहे हैं इसीलिए समस्या के टाइम क्यों का शब्द नहीं आना चाहिए। अगर व्यर्थ संकल्प चलना शुरू हो जाता है तो हमारी एकाग्रता खत्म हो जाती है, और एकाग्रता खत्म होने के कारण जो समस्या का हल होना चाहिए वो तो होता ही नहीं, फिर समझते हैं ड्रामा में शायद मेरा पार्ट ही ऐसा है... ऐसा सोचते और दिलशिकस्त हो जाते हैं। तब बाबा कहते हैं कि तपस्या माना मन-बुद्धि की एकाग्रता। तपस्या माना योग में बैठ जाना नहीं, योग लगेगा ही नहीं क्योंकि मन और बुद्धि एकाग्र है ही नहीं तो कैसे योग लगेगा और तपस्या कैसे होगी? तो पहले यह चेक करो कि हमको अगर तपस्वी बनना है, तपस्या में सक्सेस (सफल) होना है तो पहले मेरा मन एकाग्र हो। ऐसे नहीं मैं अभी सोचूँ और मन आधा घंटे के बाद जाके मेहनत करके ठीक हो। उसमें आधा घंटा तो चला गया।

तो अगर आप अच्छी तरह से तपस्या करना चाहते हैं तो मन और बुद्धि को एकाग्र करो। एकाग्रता का आधार है कन्दोलिंग और रूलिंग पॉवर। रूलिंग पॉवर का मतलब यह है कि मैं सचमुच अपने को आत्मा मालिक हूँ, रूलर हूँ... ऐसे समझके चलना क्योंकि जब तक हम मन के मालिक के रूप की स्मृति में नहीं रहेंगे तब तक मन वश में हो नहीं सकता। तो मन को एकाग्र होने के लिए हमको पहला पाठ पक्का करना होगा, मैं आत्मा मालिक हूँ। आत्मा का पाठ अगर हमारे मन में पक्का नहीं

पहले-पहले आत्मा का अभ्यास पक्का चाहिए

है तो कितना भी पुरुषार्थ करेंगे तो भी आप किसी बात में सक्सेस नहीं हो सकेंगे। तो जब तक चलते-फिरते आत्मा का पाठ हमारा पक्का नहीं है तो परमात्मा से कनेक्शन जैसे हम चाहते हैं वैसे नहीं होगा, क्योंकि हम दूसरों को समझाते हैं, आप भगवान को याद करना चाहते हैं तो भी क्यों नहीं याद आता है? क्योंकि अपने को शरीर समझके करते हो, अपने को आत्मा समझके करो तो परमात्मा याद आयेंगे, ऐसे दूसरों को पाठ पढ़ाते हैं। तो पहले यह चेक करें हम आत्म अभिमानी की स्टेज में पास हैं? क्योंकि देहभान कैसे छूटेगा? आत्म-अभिमान बनने से।

हम लोगों ने शुरू में इसका अभ्यास बहुत किया है, चलते-फिरते भी इसका अभ्यास किया है। अभी तो आने से ही चाहे घर की सेवा, चाहे बाहर की सेवा में लग गये। आत्मा का पाठ हम लोगों को पक्का करना चाहिए। मैं आत्मा रूप में स्थित नहीं होंगी तो मन मेरा क्यों मानेगा? तो सदा याद रखो मैं आत्मा करावनहार हूँ कर्मन्द्रियों द्वारा, और बाबा हमारा करावनहार है इसलिए मैं निमित्त हूँ। अगर एक करावनहार शब्द भी हमको याद आवे तो उसमें मजा है ना, मालिक बनके मैं करा रही हूँ। तो हम आत्मा मालिक हैं, करावनहार हूँ, यह मेरी कर्मन्द्रियाँ जो हैं वो कर्मचारी साथी हैं क्योंकि इनके बिना तो काम नहीं चल सकता है ना! तो पहले आत्मा का पाठ चेक करो, हम लोगों का फाउण्डेशन ही यह है। सारा दिन कर्म करते यह याद रहता है कि मैं आत्मा हूँ, परमात्मा की सन्तान हूँ फिर बाबा जो भी स्वमान देता है... उसे याद करो।

त्याग और तपस्या की मूर्ति बनो तो सेवायें अपने आप होंगी

राजयोगिनी दादी जानकी जी



बाबा की दिल को खुश करने के लिए, सारी उम्र सफल करने के लिए सेवा में सदा हाज़िर रहे हैं। बाबा के जो अच्छे-अच्छे महावाक्य हैं वो कभी भूलते नहीं हैं, बाबा की कोई बात याद आती नहीं है। मैं कोई को भी फिकर में या भारी नहीं देखना चाहती हूँ। कोई घड़ी भी कोई कारण से भारी हो जाये, तो भी सेकण्ड में हल्का हो जाओ। कोई बात नहीं, लेट गो। शान्ति से काम लो। यह एक्टिंग नहीं है वास्तव में राजाई है। बाबा ऐसे ही राजा नहीं बना, बाबा को गालियाँ भी खानी पड़ी। बच्चों के भी कई प्रकार के खेल देखे। अच्छे-अच्छे बच्चे जो बाबा-बाबा कहें, वो कल बाबा कौन है? मैं तो जा रहा हूँ... मेरे को भी कहने लगे तुम सब मूर्ख हो, अपनी जीवन गंवायेगी, तुम भी सोचो अपना। ऐसे अच्छे-अच्छे को भी संशयबुद्धि होते हुए देखा है। इससे बचने के लिए संग और अन्न की बहुत सम्भाल चाहिए।

बाबा ने जो परहेज सिखाई है जितना उस परहेज में रहें हैं तब फायदा है। पहले-पहले जब सेवा में निकले, कुछ भी

खाने को नहीं होता था सिर्फ रोटी बनाके नमक लगाके खाते थे, पर फिर भी वो दिन बड़े प्यारे थे, उन दिनों में बहुत अच्छा लगता था। त्याग, तपस्या से जो सेवायें हुई हैं, वह अभी तक भी काम आ रहा है। अपने आप जिस समय जो चाहे वो हो जाता है, कभी भूल से भी कुछ मांगना नहीं पड़ा। पहले दूध ब्रश भी नहीं यूज करते थे, नीम से ही दातून करते थे। तो जो बाबा ने कहा है किया है, कराया है। अभी भी मैं आपको कहती हूँ समय और संकल्प को सफल करना। एक भी संकल्प मेरा निष्फल न जाये। बाबा कहता है "मैं बैठा हूँ" हो जायेगा... बड़ी बात नहीं है, यह अनुभव करो।

सिर्फ त्याग वृत्ति, तपस्या वृत्ति की मूर्ति रही तो सेवायें आपेही होती और बढ़ती रहेगी। कई प्रकार की सेवायें हुई हैं परन्तु बड़ी सुख, शान्ति और प्रेम से सेवा हुई है। मैं अभी यही चाहती हूँ जैसे हमने निमित्त बनके सेवायें की हैं, सबने मिल करके की हैं वैसे करें तो कहीं कोई प्रॉब्लम नहीं होगी।



अमृतवेला है वरदाता बाप से वरदान लेने का

एक बार अमृतवेले आँख खुलते ही एक आवाज़ सुनी जैसे कोई जोर-जोर से चिल्ला रहा है, पुकार रहा है, आवाज़ कर रहा है। इधर-उधर देखा कुछ नहीं नजर आया, ऐसे भी लगा जैसे कोई मर गया हो, इतने में ही रिकार्ड बजा साढ़े तीन का, उठी। आकर बाबा के पास, बाबा की मीठी यादों में बैठी। ऐसी भासना आई बाबा बार-बार यह कह रहा है बच्ची अब बहुत जल्दी वो दिन आना है, जब तुम्हारे विजय के नगाड़े बजने हैं। दुनिया देखती ही रह जायेगी, तुम उड़के चले जायेंगे। तुम शक्तियों की सिद्धि कहो, सफलता कहो, विजय कहो, अब बहुत जोर से सारी दुनिया में यह आवाज़ उठनी है, इसलिए सबको बोलो- कोई भी बीता हुआ कुछ भी न देखे, यह क्या होगा, कैसे होगा यह न सोच सब आगे-आगे बढ़ते जाओ। ऐसे ही सुबह के टाइम कई बार बाबा कुछ प्रेरणा दे देता।

मैं बाबा से पूछती हूँ क्या सिद्धियों को सामने लाना है, क्या सिद्धियों का आह्वान करना है, या सिद्धि स्वरूप बनना है? या सिद्धि स्वरूप हैं? उसी घड़ी आता मैं ये सूक्ष्म संकल्प भी क्यों उठाऊँ, मुझे सिद्धि स्वरूप बनना है। क्यों न समझूँ मैं हूँ ही सिद्धि स्वरूप। न हूँ तो संकल्प उठाऊँ। शक्य हो तो पुरुषार्थ करूँ। हमारे मस्तक पर लिखा है चमकती हुई मणियाँ हो, मणि का अर्थ ही है चमकना। कल्प पहले भी चमक वाली मणि थी, आज भी हूँ, हमें नशा रहता हम हैं ही बाबा की चमकती हुई मणियाँ, सिद्धि स्वरूप

मणियाँ, हम कोई झूठे पत्थर नहीं हैं। हम तो सच्चे पन्ना और माणिक हैं, तब तो हमारे ऊपर पुखराज परी, नीलमपरी का गायन है। हर बात में मैं अपने को सफलतामूर्ति, विजयी देखती हूँ, मैं कभी दिलशिकस्त नहीं होती।

अमृतवेले ऐसी मीठी-मीठी रूहरिहान बाबा से चलती है। बाबा हम बच्चों को रोज हर तरह से पुश करता। सवेरे का टाइम है वरदान लेने का और शाम का टाइम है वरदान देने का। यह कैसे? सवेरे जब मैं बैठती तो जैसे ऊपर से फोकस की तरह सारे वरदान बाबा मुझे दे रहा है, ऐसे लगता है जैसे किसी चीज पर सर्व प्रकार के लाइट के फोकस दिये जाते- वैसे सारे वरदानों का फोकस बाबा देता और मस्तक चमकता जाता- गोल्डन होता जाता। इन जटाओं पर जैसे स्नो फॉल की तरह लाइट का फॉल बह रहा है। ऐसे मैं स्वयं के साथ-साथ सबको देखती हूँ। सवेरे-सवेरे बुद्धि दिव्य रहती, देह भान से परे बाबा में रहती, सतोप्रधान होती, उस टाइम बाबा से सहज ही बुद्धि जुटी होती, वह घड़ियाँ ऐसे अनुभव होती जैसे सारे दिन के लिए बाबा सबकुछ कर देता है, तब कहा अमृतवेला है वरदाता बाप से वरदान लेने का। कई बार बाबा गुहा ज्ञान की लहरों में ले जाता, कई बार सर्विस की नई-नई प्रेरणायें देता, शक्तियाँ भरता फिर कहता बच्ची मैंने छत्र रख दिया- अब जाओ सारा दिन राजधानी में सेवा करो, सिंहासन पर तो छत्रधारी ही बैठेंगे ना! कई बार



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

सुबह सुस्ती होती, इधर सुस्ती आती उधर चुस्त करने बाबा उठा ले जाता, फिर कहता देखा उठी तो क्या पाया? बाबा कहता बच्ची सुस्त नहीं बनो, उठो तो छत्र रखूँ, अमृतवेले बाबा छत्रछाया का छत्र रख देता है। माया से विजय पाने के लिए बाबा छत्र पहना देता है, कोई भी दुश्मन नहीं आता, दूर से ही भाग जाता, इसलिए कहते हैं सवेरे-सवेरे बाबा की छत्रछाया के नीचे बैठो तो छाया में रहने से माया परे हो जायेगी।

मैं देखती हूँ अमृतवेले बाबा के सामने जैसे अनेक बच्चे बैठे हैं- बाबा सबके ऊपर हाथ फिराता जाता, यह कोई भक्ति नहीं, बाबा हम सबके ऊपर सिर से पांव तक हाथ घुमा देता कि बच्चे तुम सदा छाया में रहना, माया का तुम्हारे ऊपर कोई वार न हो। इसको कहते हैं कदम में पदम, बाबा अपनी लाइट-माइट से माया की नजर उतार देता है। हम बाबा के कितने लक्की, भाग्यशाली बच्चे हैं। बाबा हमें इतनी लाइट देता, शक्ति देता, सेफ्टी में रखता, इसको कहते हैं माया तुम्हारा

हम बाबा के कितने लक्की, भाग्यशाली बच्चे हैं। बाबा हमें इतनी लाइट देता, शक्ति देता, सेफ्टी में रखता, इसको कहते हैं माया तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकती।



बाल भी बांका नहीं कर सकती। ऐसा हम सभी के लिए देखती, सब आकारी रूप में फरिश्ते होते। सबको बाबा रूहानी दृष्टि देता फिर कहता जाओ सारा दिन कामकाज करो, मैं अपना साकारी रूप नहीं देखती। मैं बाबा की परीजादी हूँ, बाबा और बाबा के हम बच्चे चमकती हुई मणियाँ हैं, बस। यह सब सुनाने का सूक्ष्म भाव यह है कि आप सब भी अपने को बहुत-बहुत महान आत्मा समझो। यह अन्डरलाइन करो, हम कम नहीं, पता नहीं यह होशियार हैं, मैं ऐसी हूँ, यह ऐसी ऐसा कभी भी नहीं सोचो। छोटी भी सुभान अल्ला तो बड़ी भी। छोटी भी महान आत्मा तो बड़ी भी।

हम सबको निश्चय है हमें भगवान पढ़ाता है, हम ईश्वरीय परिवार के हैं, ब्रह्मा बाबा हमारी गुप्त माँ हैं, हम भगवान के प्यारे हैं, हम शेरणी शक्तियाँ हैं। हम सबका टाइटल, निश्चय, सरनेम एक ही है, हम ब्राह्मण कुल भूषण हैं, इसलिए कभी भी अपने को नीचा नहीं समझो। नम्रता गुण है, नीच दासपना है।



रायपुर-छ.ग. राष्ट्रपति बनने से पूर्व श्रीमति द्रौपदी मुर्मू के रायपुर आगमन पर ब्रह्माकुमारीज की ओर से क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी ने तिलक लगाकर व गुलदस्ता भेंट कर उनका स्वागत किया। साथ ही उन्हें ब्लेसिंग कार्ड व प्रसाद भेंट किया। इस मौके पर पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह, केन्द्रीय जनजातीय राज्यमंत्री श्रीमति रेणुका सिंह, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष धरम लाल कौशिक, सांसद रामविचार नेताम सहित ब्र.कु. सविता बहन एवं ब्र.कु. वनिषा बहन उपस्थित रहे।



पन्ना-म.प्र. कुशा भाऊ ठाकरे जन्म शताब्दी समारोह में 'सक्षम नेतृत्व-सुरक्षित राष्ट्र' विषयक कार्यक्रम में प्रहलाद सिंह पटेल, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग एवं जल शक्ति राज्यमंत्री, भारत सरकार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सीता बहन, स्थानीय उपसेवाकेन्द्र संचालिका।



मुम्बई-थाने। महाराष्ट्र के नये मुख्यमंत्री माननीय एकनाथ शिंदे को उनके निवास स्थान, थाना वागले इस्टेट पर जाकर अभिनंदन करने के पश्चात् उन्हें गुलदस्ता एवं ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारीज लाइट हाउस थाने शिवाजी नगर वागले इस्टेट सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. हिना बहन, ब्र.कु. ज्योत्सना बहन एवं ब्र.कु. संदीप भाई।

निरंतर याद में न रहने का कारण

ईश्वरीय नियमों का उल्लंघन करना... जब हम ईश्वरीय नियमों का उल्लंघन करते हैं तो शिव बाबा की याद भूल जाती है। शिव बाबा को भूलने से अन्य के प्रति घृणा आनी शुरू होती है। मानों किसी ने आपका काम बिगाड़ दिया, आपके रास्ते में उसने रुकावट डाल दी, किसी के सामने आपकी इनसल्ट कर दी अथवा कोई ऐसा नुकसान पहुँचा दिया तो आपको बार-बार उस व्यक्ति के प्रति रोष आता रहेगा, उसकी ही याद आती रहेगी और परमात्मा की याद से कोसों दूर चले जायेंगे। जिसके प्रति घृणा हो, द्वेष हो, वैर-विरोध हो वो भी ज़्यादा याद आयेगा। जैसे किसी के प्रति आप की ज़्यादा प्रीत होती है तो वो बहुत याद आयेगा और जिसके प्रति नफरत और ईर्ष्या, द्वेष हो तो वो भी बहुत याद आयेगा। आमतौर पर व्यक्ति को ये दो ही याद आते हैं बाकी सब भूल जाते हैं।

बाबा कहते हैं, तुम्हारे दुश्मन कोई व्यक्ति नहीं है। जब तक अपने मन में यह नहीं सोचा है कि हमारे दुश्मन कोई नहीं है। कोई भी इन्सान हमारा दुश्मन नहीं है। अगर हमने कोई भी गलत अथवा उल्टा काम किया ही नहीं है तो हमारा कोई कुछ बिगाड़ ही नहीं सकता। किसी भी परिस्थिति में ठीक हमारे अच्छे कर्म कोई न कोई ऐसा रास्ता निकाल देंगे जिससे हम सुरक्षित निकल आयेंगे। हमारे नुकसान के लिए कोई भी निमित्त बना हो लेकिन असल में उस नुकसान का कारण है हमारे बुरे कर्म। इसलिए हमारे दुश्मन हैं बुराई, विकार। निमित्त कोई भी बन सकता है। आज वह बना है, कल दूसरे प्रकार के नुकसान के लिए और कोई बन सकता है। इसलिए हमारे अन्दर सबके प्रति शुभ-भावना और शुभ कामना होनी चाहिए। हमें यही सोचना चाहिए कि हरेक का भला हो, हरेक का अच्छा हो। कर भला तो हो भला। यह हमारे जीवन का बुनियादी उसूल होना चाहिए। हम

यह दृढ़ निश्चय करें कि हमें किसी के बारे में बुरा सोचना ही नहीं है, स्वप्न मात्र में भी बुरा नहीं सोचना है। बुरा सोचना माना दुःख देना। कई सोचते हैं कि इसको छुआ मार दूँ। अब उसने बुरा सोचा, उसके पास उस समय छुआ नहीं है, और आदमी भी बैठे हैं इसलिए उसने मारा नहीं। वह मजबूर है। अगर उसके पास छुआ होता, वह जिसको मारना चाहता था वो अकेला होता और मारकर भाग निकलने के लिए साधन भी होता तो वह छुआ



ब.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

मार देता। इस प्रकार कोई आदमी पहले बुरा सोचता है, बाद में बुरा करता है। यह जो बुरा सोचना है, यही बुराई की जड़ है। किसी को दुःख देने की बात तो दूर रह गयी लेकिन किसी को दुःख मिले अथवा हम उसको दुःख दें- ऐसा सोचना भी बहुत बुरा है। ऐसा सोचना ही नहीं है। जब हमारी ऐसी शुभ-भावना, शुभ कामना वाली वृत्ति होगी तब हमारी याद निरन्तर होगी।

जिसके प्रति घृणा और दुश्मनी होगी उसकी याद आती है, वैसे ही जिसके प्रति मोह होता है उसकी भी याद आती है। इसलिए ही बाबा कहते हैं, नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा। यह हमारे पेपर का आखिरी

प्रश्न है, इसमें हमें पास होना है। इसलिए नष्टोमोहा के साथ-साथ नष्टोघृणा भी हो जायें तब स्मृतिर्लब्धा सहज हो जायेंगे। भले ही आप में किसी के प्रति मोह नहीं है लेकिन उसके प्रति घृणा पैदा हो गयी तो जोश आ जायेगा, रोष आ जायेगा। जब भी उस व्यक्ति को आप देखेंगे, उसकी याद आयेगी तो आप में उबाल आ जायेगा। शिव बाबा की याद के बदले उस व्यक्ति की याद आ जायेगी। इससे कितना नुकसान हो गया! अगर उस व्यक्ति के बदले हमने शिव बाबा को याद किया होता तो हमारा भविष्य कितना ऊँचा बनता! कितनी बड़ी प्राप्ति होती! हमारे विकर्म विनाश होते!

अगर आप उस व्यक्ति को दुष्ट कहते हो, खराब कहते हो तो उसको क्यों याद करते हो? जब आप उसको अच्छा ही नहीं समझते हो, तो बुरे को क्यों याद करते हो? जब उस व्यक्ति को इन स्थूल आँखों से देखना ही नहीं चाहते हो तो मन की आँखों से क्यों देखते हो? किसी को बुरा समझ कर उसको याद करना और शिव बाबा को भूलना - यह बहुत बड़ा पाप करना है, यह जन्म-जन्मान्तर का शिव बाबा का वर्सा गंवाना है। यह बात भले ही बड़ी छोटी-सी है लेकिन बहुत भारी है। जिस प्रकार एक कमरे में अथाह धन-सम्पत्ति रखी हुई हो, कीमती चीज हो, करोड़ों नोटों की गड़ियाँ रखी हुई हों तथा किसी ने वहाँ एक जलती हुई सिगरेट का टुकड़ा फेंक दिया और उससे उस कमरे में आग लग गयी हो तो कितना नुकसान हो जाता है! इसी प्रकार घृणा ऐसी चिंगारी है जो हमारे ज्ञान को भस्म कर देती है। जिस प्रकार, बाबा की याद विकर्मों को दग्ध करती है वैसे ही घृणा और द्वेष, सुकर्म और ज्ञान को भूसा बना कर उसे भस्मीभूत कर देते हैं। इसलिए नष्टोमोहा के साथ नष्टोघृणा भी होना चाहिए तब हम स्मृतिर्लब्धा बन सकेंगे।



बीदर-कर्नाटक। भगवंत खुबा, यूनिनयन मिनिस्टर ऑफ स्टेट फॉर केमिकल्स एंड फर्टिलाइज़र्स, न्यू एंड रीन्यूएबल एनर्जी, भारत सरकार को शांतिवन में होने वाले ग्लोबल सम्मिट कार्यक्रम का निमंत्रण देने के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु.पार्वती बहन, ब्र.कु.सपना बहन, ब्र.कु. देवेन्द्र भाई, ब्र.कु. बाबूरेड्डी भाई तथा ब्र.कु. भान्द्र भाई।



बिलासपुर-राजकिशोर नगर(छ.ग.)। राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस पर कोट पटना सूरजपुर से आये नाड़ी वैद्य सुनील गुप्ता को आत्मस्मृति का तिलक देकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. मंजू दीदी।



बिलासपुर-राजकिशोर नगर(छ.ग.)। अपोलो हॉस्पिटल के शिशु रोग विशेषज्ञ व वरिष्ठ सलाहकार डॉ. सुशील कुमार को आत्म स्मृति का तिलक देकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. गायत्री बहन।



इंदौर-गंगोत्री विहार(म.प्र.)। राष्ट्रीय डॉक्टर्स दिवस पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा शासकीय पॉलीक्लिनिक सभागार में डॉक्टर्स के लिए आयोजित सेमिनार एवं अभिनंदन समारोह में डॉ. राजेंद्र नाइक, अस्पताल इंचार्ज, डॉ. अशोक मालू, ई.एन.टी. सर्जन, ब्र.कु. सीमा दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, डॉ. पंकज मेहर, डेंटिस्ट, डॉ. जयेश दोषी, डेंटिस्ट, डॉ. वंदना केसरी, स्त्री रोग विशेषज्ञ, डॉ. सुषमा बोरीवाल, स्त्री रोग विशेषज्ञ, डॉ. निधि जैन, आयुर्वेदिक चिकित्सक, डॉ. अशोक गुप्ता, आयुष चिकित्सक आदि उपस्थित रहे।



यू.के.-यूरोप। यू.के. की क्वीन एलीजाबेथ 2 की प्लैटिनम जुबली बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। रानी ने अपने 70 वर्षों के शासनकाल में लगातार गुणों और अथक सेवा का प्रदर्शन किया है, जो किसी भी सेवा करने वाले सम्राट की सबसे लम्बी सेवा है। इसे उत्सव के रूप में पूरे देश में छोटे व बड़े, सेलिब्रिटी तथा समुदायों सभी ने मनाया। इसके तहत ब्रह्माकुमारीज लीसेस्टर, सिख वेलफेयर एवं कल्चरल सोसाइटी के संयुक्त तत्वाधान में हार्मनी हाउस में आयोजित भव्य कार्यक्रम में हाई शेरीफ ऑफ लीसेस्टरशायर मेहमूदा ड्यूक, बारोनेस सैंडी वर्मा, चेयरमैन ऑफ लीसेस्टरशायर काउंटी काउंसिल केविन फेलथम, लीसेस्टरशायर पुलिस कमिश्नर रूपर्ट मैथ्यूज तथा अन्य समुदायों एवं धर्मों के प्रतिनिधियों सहित ब्र.कु. मौरीन बहन, प्रोग्राम डायरेक्टर, ब्रह्माकुमारीज, यू.के., ब्र.कु. दक्षा बहन सहित ब्रह्माकुमारीज के ग्रीस, इंडिया, श्री लंका तथा यूएसए के प्रतिनिधि शामिल रहे।

सही शक्ति का प्रयोग सही समय पर...

बाबा ने हम बच्चों को एक बहुत सुन्दर खजाना दिया है, और वो खजाना है - सर्वशक्तिवान की सर्व शक्तियों का, गुणों का। बाबा की एक मुरली मुझे याद आती है कि चुनौती के वक्त अगर सही शक्ति का प्रयोग किया गया तो अष्ट की माला में आ जायेंगे। यानी 'पासविद् ऑनर' हो जायेंगे। इसलिए सर्वशक्तिमान की सर्वशक्तियों का खजाना हमें मिला है। अब जो प्रॉब्लम, जो चुनौती हमें आती है उस समय कौन-सी शक्ति का प्रयोग करना है, कहाँ सहनशक्ति का प्रयोग करना है, कहाँ समाने की शक्ति का प्रयोग करना है और उसका प्रयोग करते हुए हम सहजता से उसको पार करें। जो कहावत है कि साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे। इस तरह उस शक्ति का प्रयोग करते हुए शक्ति स्वरूप बनें।

बाबा ने कहा है - बच्चे आप सभी को शक्तियों के रूप में भुजाओं में अष्ट अस्त्र-शस्त्र मिले हैं। उसी का तो गायन-पूजन हो रहा है। जो चुनौती, जो प्रॉब्लम आपके सामने आती है तो उस समय पहले 2 मिनट साइलेंस में रहकर के सोचो कि कौन-सी शक्ति का मुझे प्रयोग करना है। और ऐसे समय पर उस शक्ति को इमर्ज करो या आह्वान करो। बाबा ने ये भी हम बच्चों को गैरंटी दी है- बच्चे जब ये आप बाबा को कहेंगे, बाबा आज मुझे इस शक्ति का प्रयोग करना है तो हुजूर भी हाज़िर हो जायेंगे उस शक्ति के साथ। सर्वशक्तिवान बाबा आपकी मदद के लिए हाज़िर हो जायेंगे। क्योंकि हम अपने मन को साइलेंस में नहीं ले जाते और सोचते नहीं हैं कि इस समय कौन-सी शक्ति का प्रयोग करना है तो हम गलत जगह पर, गलत बातों का प्रयोग कर लेते हैं जिससे वो चुनौती और विकराल रूप धारण कर लेती है। इसलिए बाबा कहते हैं कि थोड़ा तत्काल रिएक्शन होने के बजाए, तत्काल रिएक्शन में आने के बजाए थोड़ा शान्ति से सोचो कि इस समय मुझे कौन-सी शक्ति का आह्वान करना है। और आप बाबा को याद करके उस शक्ति का आह्वान करो, वो आयेगा। लेकिन होता

क्या है कि वहाँ शक्ति का प्रयोग करने के बजाए कोई न कोई कमजोरी जरूर घुस जाती है और उसका प्रयोग हो जाता है। और उसमें भी खास करके किसका प्रयोग हो जाता है? गुस्सा आ जाता है। अब गुस्सा आ गया और गुस्से का प्रयोग हो गया तो वो चुनौती बड़ा स्वरूप लेगी या कम होगा? बड़ा स्वरूप धारण कर लेती है। फिर उसको हैंडल करना, उसको पार करना बहुत मुश्किल होगा।

कई बाबा के बच्चे जब मधुबन में भी आते हैं तब कई बार हम उनको पूछते हैं बाबा के पास आये हैं तो बाबा को क्या गिफ्ट देकर जा रहे हैं? तो कहते हैं कि हाँ, यहाँ हम आज से हमारी ये कमजोरी दान करके जा रहे हैं। बाबा तो कहते हैं ना कि



डॉ. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

अपना किचड़ा मुझे दे दो। करते हैं ना ऐसा कई लोग? लेकिन सोचने की बात है कि मान लो यहाँ एकदम अंधेरा हो और कोई व्यक्ति आकर कहे- इस अंधेरे को निकालो। अंधेरा निकलेगा? नहीं। क्यों? क्योंकि अंधेरे का कोई स्रोत नहीं है। लेकिन ये अंधेरा क्यों आया, प्रकाश के अभाव के कारण। प्रकाश जगाओ तो अंधेरा अपने आप समाप्त हो जाता है। अंधेरे को निकालने की मेहनत नहीं करो। ठीक इसी तरह जीवन के अंदर ये कमी-कमजोरी आई है तो क्यों आई है? कमी-कमजोरी को निकालने का प्रयत्न नहीं करो। क्योंकि वो निकलेगी नहीं, वो अंधेरा है। आप अगर बाबा को लिख करके भी देकर जायेंगे ना कि बाबा आज से मैं ये कमजोरी आपको दान देकर के जाती हूँ

लेकिन यहाँ से जाने के बाद जैसे ही कोई परिस्थिति आई तो क्या होगा, वो कमजोरी वापिस आ जाती है, फिर व्यक्ति उदास, निराश हो जाता है। बाबा के कमरे में लिखकर, देकर के आये। पता नहीं बाबा की मदद क्यों नहीं मिलती? वो इसलिए क्योंकि कमजोरी को निकाला नहीं जाता है। कमजोरी क्यों आई, शक्ति अभाव यही कमजोरी है। जिस तरह अंधेरा क्यों आया? प्रकाश का अभाव, यही अंधेरा है। अंधेरे का अपना स्रोत नहीं है, प्रकाश का स्रोत है। ठीक इसी तरह शक्ति का स्रोत है और शक्ति का स्रोत सर्वशक्तिवान बाप है।

अब कोई व्यक्ति का हाथ हिल रहा हो। आप उसको कहो- हाथ नहीं हिलाओ, अरे कमजोरी है ना! हाथ तो हिलेगा ही। अगर आप उसको टॉनिक दो, विटामिन दो। ऐसी चीजें दो जो शक्ति उसके अन्दर जनरेट करे। तो शक्ति जैसे आने लगेगी तो हाथ अपने आप हिलना बन्द हो जायेगा। आज हमारा मन भी ऐसे ही हिलता रहता है। ये करो, ऐसा करो, वैसा करो। ये करना चाहिए वो करना चाहिए। मनुष्य निर्णय नहीं ले पाता। इतना मन डगमगाता है। ये शक्ति का प्रयोग करूँ, वो शक्ति का प्रयोग करूँ। मन इतना कमजोर हो गया है। और आप बाबा को कहो कि बाबा हमने ये कमजोरी आपको दे दिया। ऐसे कमजोरी निकल जायेगी क्या? नहीं।

इसलिए बाबा कहते हैं- अमृतवेले बैठो, बाबा को याद करो। सर्वशक्तिवान के रूप में याद करो। और बाबा से शक्ति का आह्वान करो। माँगने की जरूरत नहीं है। जिस तरह से आप बाहर धूप में खड़े रहो तो सूर्य से माँगते नहीं हो कि हे सूर्य देवता तुम्हारी गर्माइस मुझे दे। आप खड़े रहो मिलेगी। ठीक इसी तरह बाबा से भी माँगने की जरूरत नहीं है। आप मन को बाबा में एकाग्र करो। जैसे-जैसे शक्ति का आह्वान करते जायेंगे, वो कमजोरी भरती जायेगी। आत्मा सशक्त होती जायेगी। और जैसे-जैसे आत्मा सशक्त होने लगेगी, वैसे ही क्या होगा? वो कमजोरी समाप्त हो जायेगी।



सांगरहेड्डी-तेलंगाना। क्षेत्र में आने पर मिनिस्टर ऑफ फिनान्स, हेल्थ एंड फैमिली वेलफेयर हरीश राव को ब्रह्माकुमारीज द्वारा सरकारी डॉक्टर्स के लिए होने वाली विहासा ट्रेनिंग कार्यक्रम के बारे में जानकारी देने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमंगला बहन, संचालिका, बीदर, सांगरहेड्डी एवं सम्बंधित सेवाकेन्द्र तथा ब्र.कु. सुनंदा बहन, संचालिका, बीदर रामपुरे कॉलोनी। इस मौके पर डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर ए. शरत, आई.ए.एस. तथा अन्य अधिकारी गण उपस्थित रहे।



जबलपुर-भंवरताल(म.प्र.)। नवनिर्वाचित मेयर जगत बहादुर अन्नू के 'शिव स्मृति भवन' सेवाकेन्द्र में आने पर आयोजित कार्यक्रम में उन्हें पगड़ी व शॉल पहनाकर सम्मानित करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भावना बहन। इस मौके पर डॉ. श्याम रावत, ब्र.कु. वर्षा बहन, ओमप्रकाश भाई, रितेश भाई, डॉ. दुबे आदि उपस्थित रहे।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स नं - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क - M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NO:- 30826907041
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH:- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya
Vishwa Vidhyalya, Shantivan
Note:- After Transfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org OR
Whatsapp, Telegram No.:- 9414172087



कटनी-म.प्र.। नवनिर्वाचित महापौर श्रीमति प्रीति संजीव सूरी को बधाई देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, ब्र.कु. दुर्गा बहन तथा ब्र.कु. सविता बहन।



आनंद नगर-पूर्णा(महा.)। ब्रह्माकुमारीज, वृक्ष मित्र परिवार नांदेड़ एवं पतंजली योग समिति नांदेड़ के संयुक्त तत्वाधान में पूर्णा से 25 कि.मी. दूर जांभुल बेट पर वृक्षारोपण किया गया। इस मौके पर आनंद नगर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रणिता बहन, वृक्ष मित्र परिवार व उसके प्रमुख संतोष मुगटकर, पतंजली योग परिवार के नांदेड़ जिला प्रमुख अनिल अमृतवार, सामाजिक कार्यकर्ता कांता राव झरीकर, जांभुल बेट सरपंच राम कदम, कृषि भूषण पुरस्कार प्राप्त भगवान इंगोले, दत्ता भाऊ बोडारकर, ब्र.कु. सोनल बहन, डॉक्टर्स, व्यवस्थापक, सरपंच आदि 120 गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



भुज-आईयानगर(गुज.)। लायंस क्लब ऑफ भुज के इंस्टॉलेशन समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. रीना बहन, लायंस क्लब के प्रेजिडेंट शैलेंद्र रावल, डिस्ट्रिक्ट गवर्नर भरत मेहता, धीरेन मेहता तथा मीना मेहता।



वरठी-भंडारा(महा.)। अनुराग अध्यापक महाविद्यालय में भावी शिक्षक बनने वाले शिक्षकों के व्यक्तित्व विकास के लिए आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. शालू बहन, ब्र.कु. तोनेश्वरी बहन, ब्र.कु. सत्यकला बहन तथा महाविद्यालय के अध्यापक गण उपस्थित रहे।



मौदा-महा.। राष्ट्रीय डॉक्टर्स दिवस पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अर्चना बहन, ब्र.कु. विमल बहन, डॉ. खंते, डॉ. सावरकर, डॉ. घटोले, डॉ. गजभिष सहित पंद्रह डॉक्टर्स व अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

ALL-IN-ONE QR

Accepted Here

Wallet KYC NOT Required

Scan & Pay using Paytm App

Wallet or Bank A/c Any Debit or Credit Card Paytm Postpaid

BHIM UPI



वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी
ब्र.कु. गीता दीदी, माउण्ट आबू

निश्चय हो तभी तो आचरण में आये

सिर्फ सत्संग का स्वरूप रखता लेकिन बाबा ने इसको स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी कहा, मतलब हम जो बातें सुनते हैं वो समझनी हैं, स्मृति में रखनी हैं। वो हमारे दिल-दिमाग में छपी हुई होनी चाहिए। इसलिए बाबा से योग, बाबा के प्रति अटेन्शन होना जरूरी है। और वो अटेन्शन तभी रहेगा, देखो दुनिया में आपका कोई प्रिय व्यक्ति कैसी भी बात

बाबा के महावाक्य हमें सुनने और समझने हैं। कई बार हम सुनते हैं, बाबा की बातों को समझते हैं लेकिन हम खुद लॉजिकली विवेक से बाबा की बातों से कन्विंस (मानना) नहीं होते। जिसको बाबा सरल शब्दों में कहते हैं कि सुनना, समझना, मानना, स्वीकार करना और निश्चय करना कि जो बाबा ने कहा वो सत्य है, कल्याणकारी है और जीवन में धारण करना सम्भव है तब बाबा ने कहा है।

कई बार हम अपना तर्क चलाते हैं कि बाबा जो कहते हैं बात तो सही है लेकिन जीवन में धारण करना बड़ा मुश्किल है। हम तो दुनिया में रहते हैं ना, गृहस्थी में रहते हैं ना तो आचरण में लाना कितना मुश्किल है। इस प्रकार हम अपना तर्क चलाते हैं और ये समझते हैं कि आप बहनें तो सेंटर पर रहती हैं, समर्पित हैं और झंझट आपको नहीं है इसलिए तो आप धारण कर सकते हैं लेकिन हम लोगों के लिए बहुत मुश्किल है। वास्तव में हमें विवेक से इस बात को समझना चाहिए कि कैसे बाबा प्रवृत्ति मार्ग के संसार के लिए ज्ञान देते हैं। क्योंकि संसार अनादि काल से प्रवृत्ति मार्ग का ही बना हुआ है, निवृत्ति मार्ग का नहीं। और बाबा भी इस संसार में स्वर्ग लाना चाहते हैं। प्रवृत्ति में पवित्रता स्थापन करना चाहते हैं। तो बाबा जब हम बच्चों को ज्ञान देते हैं तो जरूर बाबा को पता है ना कि हम गृहस्थ में हैं, हम कलियुगी दुनिया में हैं और ये जानते हुए भी बाबा हम बच्चों को कहते हैं इसका अर्थ यही हुआ ना कि जरूर हमारा जीवन में धारण करना पॉसिबल है तब तो बाबा कहते हैं। जो चीज आचरण में ला ही नहीं सकते तो वो बात बाबा क्यों बोलते? हम सबको ये निश्चय हो कि जो बाबा कहते हैं वो सत्य है और कल्याणकारी है। जब ये निश्चय हमें हो जाता है तब हमारी बुद्धि का भटकना समाप्त हो जाता है। हमारा एक मन्दिर से दूसरे मन्दिर में, एक सत्संग से दूसरे सत्संग में, एक गुरु से दूसरे गुरु में, एक शास्त्र से दूसरे शास्त्र में भटकना समाप्त हो जाता है। मतलब भक्ति हमारी पूरी हो जाती है। इसको कहते हैं निश्चय। तो सुनना, समझना और फिर है स्वीकार करना, ये बहुत जरूरी है।

जो चीज आचरण में ला ही नहीं सकते तो वो बात बाबा क्यों बोलते? हम सबको ये निश्चय हो कि जो बाबा कहते हैं वो सत्य है और कल्याणकारी है। जब ये निश्चय हमें हो जाता है तब हमारी बुद्धि का भटकना समाप्त हो जाता है।

आपको कहेगा वो आपको अच्छी लगेगी, स्वीकार्य हो जायेगी। और जिससे आपका प्यार नहीं वो आपके कल्याण की बात भी कहेंगे तो भी वो आपको स्वीकार्य नहीं होगी। तो बाबा से प्यार, बाबा से योग ये बहुत जरूरी है और मुरली के समय इसलिए बाबा सदा हमें बताते हैं कि कैसे हमें मुरली सुननी है। बाबा एक ही शब्द में रोज हमें अटेंटिव (सचेत) करते हैं। बाबा कहते हैं कि जब बाबा के सामने बैठते हो तो ज्ञान स्वरूप होकर बैठो। आत्मभिमानी स्थिति में बैठो। बाप के सामने ऐसे ही आकर नहीं बैठ जाओ, जैसे कि नियम से आकर बैठ गये क्लास में। वो भी अच्छी बात है लेकिन अगर ज्ञान मुझे आचरण में लाना है तो ऐसे ही आकर बैठने से नहीं चलेगा। हमें लक्ष्यपूर्वक आना होगा। और अपनी आत्मभिमानी स्थिति में बैठना होगा कि स्वयं भगवान मुझ आत्मा को पढ़ा रहे हैं। स्वयं भगवान के महावाक्य मैं सुन रही हूँ या रहा हूँ। इस स्मृति, अनुभूति और स्थिति के साथ

बाबा के ज्ञान की हर बात, बाबा का ज्ञान हमारे सामने मुरली के स्वरूप में है। ज्ञान की हर बात को हमें यथार्थ रूप में समझना है। क्योंकि समझने से वो हमारी बुद्धि में छप जाती है। जब हम स्कूल में पढ़ते हैं तो सबसे पहली बात जब टीचर पढ़ाते हैं उस समय हमें अटेन्शन से पढ़ना होता है। हरेक को अपने स्टूडेंट लाइफ का अनुभव होगा कि जब टीचर पढ़ाते हैं उस समय से हम अटेन्शन से पढ़ते हैं तो वो एकदम क्लियर हो जाता है, बुद्धि में छप जाता है। जो स्कूल में क्लास में अटेन्शन से नहीं पढ़ते जिसके लिए कहते हैं कि शरीर से तो क्लास में होते हैं लेकिन मन बाहर होता है। अगर क्लास के टाइम टीचर से योग नहीं है, मुरली में आता है ना कि टीचर से योग चाहिए इसका अर्थ है कि टीचर जब पढ़ाते हैं तो उस समय हमें अटेन्शन से पढ़ना है। अगर उस समय अटेन्शन से नहीं पढ़ते तो अनुभव होगा कि बाद में कितनी बार पढ़ते हैं लेकिन वो क्लियरिटी (स्पष्टता) नहीं होती जो जब टीचर पढ़ाते हैं और ध्यान देने से होती है। इसलिए पहली बात है अटेन्शन।

दूसरी बात है कि स्कूल में टीचर पढ़ाते हैं और उस समय हम पढ़ते हैं केवल उतना पढ़ने से स्टूडेंट फर्स्ट नम्बर नहीं ले सकता, लेकिन स्कूल में टीचर जो पढ़ाते हैं वो पढ़ने के बाद जो स्टूडेंट घर जाकर होमवर्क करते हैं, उस होमवर्क को एक्ज्यूट करते हैं मतलब टीचर ने जो पढ़ाया उस पर जो स्टूडेंट व्यक्तिगत मेहनत करते हैं वो स्टूडेंट फर्स्ट नम्बर, फर्स्ट क्लास ले सकते हैं। ठीक वैसे ही ये आध्यात्मिक पढ़ाई, बाबा के ज्ञान की बातें केवल सुनने की होती तो बाबा इसको विद्यालय क्यों कहते! बाबा क्यों कहते हैं कि मैं तुम्हारा परम शिक्षक हूँ, ये स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी है। सिर्फ परिवार का रूप रखता,



गोवा-पोरवोरिम। सेवाकेन्द्र में आयोजित वरिष्ठ राजयोग शिक्षिकाओं के रिट्रीट कार्यक्रम में आने पर श्रीपद नायक, यूनिनियन मिनिस्टर ऑफ स्टेट फॉर टूरिज्म एंड मेम्बर ऑफ पार्लियामेंट, नॉर्थ गोवा के साथ समूह चित्र में ब्र.कु. शोभा बहन, ब्र.कु. वनीता बहन तथा अन्य।



कटनी-सिविल लाइन (म.प्र.)। वंदे मातरम कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी प्रदेश प्रवक्ता नेहा बाघी, भारतीय जनता पार्टी प्रदेश कार्य समिति सदस्य सुमन सोनी, राष्ट्रीय महामंत्री भाजपा महिला मोर्चा सुखप्रीत कौर व अन्य अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. लक्ष्मी बहन एवं ब्र.कु. दुर्गा बहन।



गांधीनगर से 28-गुज। नेवी मीटिंग के तहत इंडियन नेवी के वाइस एडमिरल एस.एन. घोरमड़े का गांधीनगर आना हुआ। इस दौरान सेवाकेन्द्र में आने पर उनका स्वागत करने के पश्चात् उनके साथ उपस्थित हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कैलाश दीदी तथा माउण्ट आबू से वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी।



पन्ना-म.प्र.। 'गुरु पूर्णिमा' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए पंडित डी.पी. तिवारी, गायत्री परिवार, राजू लालवानी, सिंधी समाज, शंकरलाल जगवानी, अध्यक्ष गुरुद्वारा, सिक्ख धर्म, पन्ना, ब्र.कु. सीता बहन, उपसेवाकेन्द्र संचालिका तथा श्रीमति निशा जैन, जैन सम्प्रदाय।



बिलासपुर-पोंडि दल्हा (छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'कल्प तरु' परियोजना के तहत अकलतरा निवासी अरुण सिंह के पोंडि-दल्हा स्थित 42 एकड़ की कृषि भूमि परिसर में वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी, पिछले पच्चीस वर्षों से पौधारोपण का कार्य कर रहे पुसऊ कश्यप, शास. कन्या शाला, पोंडि के पूर्व प्रधान पाठक चंद्रमोहन सिंह, भूमि के मालिक अरुण सिंह, ब्र.कु. गायत्री बहन, ब्र.कु. ईश्वरी बहन, नीता बहन, मुन्नी सिंह समेत अन्य ग्रामवासी उपस्थित रहे। रोपित किये गये पौधों का संरक्षण पोंडि ग्राम के मनीष भारद्वाज व उनके परिवार के द्वारा किया जायेगा।



छतरपुर-विश्वनाथ कॉलोनी (म.प्र.)। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'कल्प तरु' परियोजना के तहत किन्नर समाज के साथ मिलकर पौधा रोपण किया गया। इस मौके पर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रमा बहन, ब्र.कु. भारती बहन, किन्नर समाज से बहन खुशबू व साथी बहनों सहित ब्र.कु. ज्योति बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



मुम्बई-सायन। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा मुम्बई विधान सभा में आयोजित 'स्ट्रेस फ्री लिविंग विद योगा प्रैक्टिस' कार्यक्रम में विधान सभा के सभी ऑफिसर्स तथा स्टाफ सहित ब्रह्माकुमारीज की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, ब्र.कु. ई.वी. स्वामीनाथन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



भाटापारा-छ.ग.। राष्ट्रीय डॉक्टर्स दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए इंडियन मेडिकल एसोसिएशन बलौदा बाजार के अध्यक्ष डॉ. राजेश अवस्थी, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. गजेन्द्र महिलांग, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. वासुदेव ठाकुर, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. सरला निहलानी, हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. सुरेश निहलानी, मेडिकल स्पेशलिस्ट डॉ. कोटेश्वर तथा ब्र.कु. मंजू बहन।



अंबाजोगाई-महा। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान पूर्व मंत्री धनंजय मुंडे ब्रह्माकुमारीज की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी से ईश्वरीय सौगात प्राप्त करते हुए। साथ हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. वंदना बहन तथा ब्र.कु. गोपाल भाई।



इंदौर-सुदामा नगर से ई.। महापौर पुष्पमित्र भार्गव को बधाई देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रीति बहन।

स्वास्थ्य

पुदीना एक गुणकारी पौधा है। इसकी पत्तियों का इस्तेमाल व्यंजनों का जायका बढ़ाने से लेकर कई शारीरिक समस्याओं के लिए प्राकृतिक औषधि के रूप में किया जाता है। इस पर हुए कई वैज्ञानिक अध्ययनों के आधार पर यह माना गया कि पुदीना सेहत पर सकारात्मक प्रभाव दिखा सकता है। इस बात का ध्यान रखें कि पुदीना किसी भी बीमारी का इलाज नहीं है, यह सिर्फ



करने के लिए

बैक्टीरियल संक्रमण की वजह से त्वचा संबंधी कई रोग हो सकते हैं। जिनमें खुजली और जलन की भी है। यहाँ पुदीने के एंटीबैक्टीरियल, एंटीफंगल और एंटीवायरल गुण त्वचा संबंधी समस्याओं को दूर करने में मददगार साबित हो सकते हैं। रिसर्च जनरल ऑफ मेडिसिनल प्लांट के अनुसार, पुदीने में पाया जाने वाला मेंथॉल त्वचा संबंधी खुजली और जलन को कम करने में फायदेमंद हो सकता है।

पुदीने के नुकसान

जरूरी नहीं कि पुदीने के औषधीय गुण हर किसी के लिए फायदेमंद हों। कई स्थितियों में पुदीने के नुकसान भी देखने को मिल

पुदीने के औषधीय गुणों का प्रभाव हमारे शरीर में...

समस्याओं के लक्षण और प्रभाव को कम करने में कुछ हद तक मदद कर सकता है। औषधीय गुणों के कारण इसका उपयोग स्वास्थ्य के लिए भी प्रभावी माना जाता है। टपट्स यूनिवर्सिटी द्वारा किए गए शोध में पाया गया कि पुदीना में एंटीमाइक्रोबियल, एंटीवायरस, एंटीऑक्सीडेंट और एंटीट्यूमर के साथ ही एंटी-एलर्जिक गुण पाए जाते हैं, जो संयुक्त रूप से शरीर को लाभ पहुंचाने का काम कर सकते हैं।

पुदीने के पत्ते के फायदे...

इरिटेबल बाउल सिंड्रोम में सुधार के लिए

इरिटेबल बाउल सिंड्रोम एक आम विकार है, जो बड़ी आंत को प्रभावित करता है।

इसकी वजह से पेट में दर्द, दस्त और कब्ज की समस्या होती है। शोध में पाया गया है कि पुदीने की चाय में एंटीसेप्टिक गुण होते हैं। इसमें पाए जाने वाले एंटीसेप्टिक गुण इरिटेबल बाउल सिंड्रोम में आराम पहुंचाने में मददगार हो सकते हैं।

यादृशत को बढ़ाने में फायदेमंद
पुदीने के औषधीय गुण यादृशत बढ़ाने में लाभदायक हो सकते हैं। इस संबंध में इंग्लैंड की एक यूनिवर्सिटी में शोध किया गया है। इस शोध में 180 युवाओं को पुदीने की चाय का सेवन कराया गया। 20 मिनट बाद शोधकर्ताओं ने युवाओं में कई सकारात्मक परिणाम देखे, जैसे सजगता में वृद्धि और मस्तिष्क कार्य प्रणाली में तेजी। शोध में इस बात का भी जिक्र है कि पेपरमिंट चाय यादृशत और यादृशत की गति बढ़ाने में सहयोग कर सकती है। इस आधार पर माना जा सकता है कि पुदीने की चाय का सेवन यादृशत को बढ़ाने में लाभदायक

हो सकता है।

मतली की अवस्था में

बार-बार उल्टी आने की इच्छा ही मतली की समस्या है। यहाँ पुदीने के फायदे देखे जा सकते हैं। एनसीबीआई (नेशनल सेंटर फॉर बायोटेक्नोलॉजी इंफॉर्मेशन) की वेबसाइट पर पुदीने पर एक शोध प्रकाशित किया गया है। शोध में पुदीना अरोमाथेरेपी का उल्टी और मतली की समस्या पर सकारात्मक प्रभाव देखा गया। इस शोध के आधार पर कहा जा सकता है कि मतली के साथ उल्टी की समस्या से आराम पाने के लिए पुदीने की अरोमाथेरेपी कारगर साबित हो सकती है। फिलहाल, मतलद की समस्या को दूर करने वाले पुदीने के औषधीय गुण अभी शोध का विषय हैं।

सिरदर्द की समस्या को दूर करने के लिए

सिरदर्द की समस्या रातों की नींद गायब कर सकती है। इस समस्या को दूर करने के लिए पुदीना मददगार साबित हो सकता है। रिसर्च जनरल ऑफ मेडिसिनल प्लांट के एक शोध के अनुसार पुदीने को सिर पर कुछ देर लगाने में सिरदर्द में आराम मिल सकता है। इसके दर्द-निवारक गुण के पीछे इसमें मौजूद मेंथॉल का प्रभाव हो सकता है।

पाचन में फायदेमंद

पुदीने पर किए गए एक अध्ययन में जिक्र मिलता है कि यह पाचन में मददगार हो सकता है। दरअसल, यह पेट की मांसपेशियों को आराम पहुंचाने के साथ-साथ पाचन में सहायक पाचक रस के प्रवाह में सुधार का काम कर सकता है। परिणामस्वरूप, भोजन आसानी से पचता है।

त्वचा की समस्या को दूर

सकते हैं। यहाँ पर हम इससे होने वाले कुछ नुकसान के बारे में भी बता रहे हैं...

जिन्हें लो शुगर की समस्या है वो पुदीने के सेवन से दूर रहें। इसके रस का सेवन रक्त में मौजूद शुगर के स्तर को कम कर सकता है।

निम्न रक्तचाप के मरीजों को भी इसके सेवन से पहले डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिए, क्योंकि इसका सेवन मेंथॉल नामक घटक रक्तचाप के स्तर को कम करके समस्या पैदा कर सकता है।

गर्भावस्था के समय किसी भी प्रकार के नुकसान से बचने के लिए इसके सेवन से पहले संबंधित डॉक्टर की सलाह अवश्य लें।

जिनकी त्वचा सेंसिटिव होती है, उन्हें मेंथॉल से एजली हो सकती है। इसलिए, उन्हें इसके सेवन और संपर्क से दूर रहना चाहिए।



सिकंदराबाद-वेस्ट मरेडपल्ली (तेलंगाना)। ब्रह्माकुमारीज के 'दया एवं करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' वार्षिक थीम के शुभारंभ कार्यक्रम में संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, अति. महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई, ओ.आर.सी. गुरुग्राम की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, बी.वेंकटेशम, आईएएस प्रिंसिपल सेक्रेटरी फॉर बैकवार्ड क्लासेस वेलफेयर डिपार्टमेंट, अंजीनेयुलु जी, फाउण्डर एंड चेयरमैन, शक्ति ग्रुप ऑफ कंपनीज, कोंडल राव, चेयरमैन, लैम्को ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज, कश्यप भाई, एमडी, मेधा सर्वो ड्राइव्स प्रा.लि., ब्र.कु. सत्यनारायण भाई, के.एस. राजू भाई तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



मुम्बई-बोरीवली पूर्व। ब्रह्माकुमारीज के प्रभु उपवन सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'विहासा ट्रेनिंग' कार्यक्रम में डॉ. अशोक मेहता, सीनियर कंसल्टेंट कैन्सर सर्जन, नेशनल कोऑर्डिनेटर, विहासा, इंडिया, डॉ. सचिन परब, काउंसलर, हिप्नोथैरेपिस्ट, कॉर्पोरेट ट्रेनर, एसोसिएट कोऑर्डिनेटर एंड फैसिलिटेटर, विहासा, इंडिया, डॉ. मनोज मतनानी, कंसल्टेंट, पीडियाट्रिक नेफ्रोलॉजिस्ट, एसोसिएट को-ऑर्डिनेटर एंड फैसिलिटेटर, विहासा, इंडिया, डॉ. प्रियंका निम्बादास पाटिल, सीनियर इन्फेक्शन कंट्रोल ऑफिसर, ब्रीच कैन्डी हॉस्पिटल ट्रस्ट, मुम्बई एंड फैसिलिटेटर, विहासा, इंडिया, मिस कोशा भाटिया, फैसिलिटेटर, विहासा, इंडिया, राजयोगिनी ब्र.कु. दिव्यप्रभा दीदी, संचालिका, ब्रह्माकुमारीज, नॉर्थ मुम्बई सेंटर, राजयोगिनी ब्र.कु. कुंती दीदी, मलाड तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



बिजावर-म.प्र.। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत ब्रह्माकुमारीज के 'दया और करुणा के द्वारा आध्यात्मिक सशक्तिकरण' वार्षिक थीम के कार्यक्रम में असादी समाज की पूर्व अध्यक्षा सुनीता बहन, वर्तमान अध्यक्षा सजनी बहन, सिक्योरिटी विंग की नेशनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. संध्या बहन, पचमढ़ी सेवाकेन्द्र से ब्र.कु. रूपा बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रीति बहन आदि उपस्थित रहे।



बैतूल-म.प्र.। 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' महिला सम्मेलन में थाना प्रभारी अपाला सिंह, आर.डी. पब्लिक स्कूल की डायरेक्टर रितु खंडेलवाल, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. मंजू बहन, भाजपा जिला उपाध्यक्ष रश्मि साहू, पूर्व लॉयर्स क्लब अध्यक्ष अलका तातेड, समाज सेवी तरुणा द्विवेदी, ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. सरिता बहन तथा शहर की पाँच सौ से अधिक गणमान्य महिलायें शामिल रहीं।



यू.के.-वेम्बली। यू.के. की क्वीन एलीजाबेथ 2 की प्लैटिनम जुबली के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज के इनर स्पेस सेंटर पर आयोजित 'विजन ऑफ द फ्यूचर-होप, हीलिंग एंड हैप्पीनेस' कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में बायें से रब्बी जेफ बर्जर,वेम्बली सेफाडी सिनागोग, ब्र.कु. दक्षा बहन, द राइट रेवेरेन्ड जॉन शेरिंगटन, ब्रह्माकुमारीज की अति. मुख्य प्रशासिका एवं यूरोप स्थित सेवाकेन्द्रों की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, ब्रेंट मेयर काउंसलर अब्दी अदेन, मिस मेई सिम लाई,ओबे डीएल, काउंसिल केतन सेट,वेम्बली सेंट्रल वार्ड, ब्र.कु. निधि बहन तथा फिलिपा ब्लैखम। इस अवसर पर वेस्टमिन्स्टर के सहायक बिशप इमाम मोनावर हुसैन,एमबीई डीएल सहित पचास लोग उपस्थित रहे तथा 200 लोगों ने ऑनलाइन कार्यक्रम का लाभ लिया।



थाईलैंड-बैंकॉक। प्राचीन राजयोग के प्रचार और प्रसार के लिए डल्स यूनिवर्सिटी द्वारा बैंकॉक के बर्कले होटल में आयोजित दीक्षांत समारोह में डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके को डॉ. मोहम्मद फहीम,थम्मासेट विश्वविद्यालय,बैंकॉक, डॉ. मारिसा फेकवामदी,कार्यकारी उपाध्यक्ष फिलिप कैपिटल,थाईलैंड, बायिन्जा एडम लुजिदाना,कम्पला,युगांडा तथा डॉ. रिपु रंजन सिन्हा,प्रो वाइस चांसलर एशिया कॉमनवेल्थ वोकेशनल यूनिवर्सिटी ने आध्यात्मिकता में 'डी लिट' प्रदान किया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज के सुखमवित सेवाकेन्द्र बैंकॉक,थाईलैंड के कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. कैलाश भाई तथा ब्र.कु. शांता बहन उपस्थित रहे।



शांतिवन। ओम शान्ति मीडिया ऑफिस में आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् मोरबी गुजरात से नर्मदा इंटरप्राइजेज के मालिक भरत भाई पटेल तथा श्रीमति पटेल के साथ ओम शान्ति मीडिया के संपादक राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर।



स्वयं को नरिश करते रहें

एक खिले हुए गुलाब की तरह खिले रहो। देखिए एक खिला हुआ गुलाब खुशबू देता है, मुस्कुराहट देता है।अलग अलग मौकों पर फूल यूज किए जा रहे हैं। एक गुलाब का फूल एक फंक्शन के लिए भी है, एक गुलाब का फूल कहीं डेड बॉडी पड़ी है उसपर भी है। मतलब खुशी के मौके पर भी है और दर्द के मौके पर भी। सुख के मौके पर भी है, दुःख के मौके पर भी। जीत में भी गले में हार, मृत्यु में भी। लेकिन गुलाब का फूल कैसा है दोनों परिस्थितियों में! फूल में कोई बदलाव नहीं होता। वो चारों तरफ अपनी ब्यूटी को, अपनी खुशबू को बिखेरता है। फूल को देखते ही मुस्कुराहट आ जाती है। मतलब हमसे मिलते ही औरों को भी क्या मिल जाये! खुशी।

सुरेश ओबेरॉय - ये बात तो यहाँ तक समझ आ गई कि गुलाब की तरह अपने आपको यानी सॉल को नरिश करना है। और गुलाब की तरह हर परिस्थिति में मुस्कुराना है। औरों को भी खुश करना है। लेकिन नरिश कैसे करना है? **सिस्टर शिवानी -** आप पेड़-पौधों को नरिश कैसे करते हैं? **सुरेश ओबेरॉय -** पानी डालता हूँ। **सिस्टर शिवानी -** शरीर को नरिश कैसे करते हैं?

सुरेश ओबेरॉय - खाना खिलाता हूँ, पानी पिलाता हूँ। **सिस्टर शिवानी -** आत्मा को रोज क्या देते हैं नरिश करने के लिए? **सुरेश ओबेरॉय -** कभी सोचा ही नहीं ना। **सिस्टर शिवानी -** जो ये आत्मा अब इस शरीर को भी चलाने वाली है। ये आत्मा कितना कुछ कर रही है सारा दिन। आप सोचते हैं, सोचने के बाद निर्णय लेते हैं और फिर निर्णय लेकर इस शरीर के थू कर्म करते हैं। तो इस शरीर को ऑपरेट करने वाली वो शक्ति, मैं आत्मा। मेरी पहली ज़िम्मेदारी मेरे इस शरीर को चलाना और दूसरी चाहे आप बाहर जा रहे हैं, एक्टिंग कर रहे हैं कोई भी प्रोफेशन में हैं, करने वाला

कौन? आत्मा। जो सोचती है, कोई भी काम करने से पहले सोचना है हमें, निर्णय लेना है और फिर वो कर्म करना है। ये तीनों चीजें करने वाला कौन? आत्मा।

हम कोई भी कर्म बिना सोचे नहीं कर सकते। एक सोच चलेगी तब वो आगे काम होगा। तो इसका मतलब हर काम में छोटे से बड़े करने वाला कौन? मैं आत्मा। अब हमने कहा कि सारा दिन हमें काम करना है, धन कमाना है। पाँवर कमा रहे हैं, नेम-फेम ये सबकुछ कमा रहे हैं। ये सब कमाने वाला कौन? मैं आत्मा। कौन-सी चीज है जो मैं नहीं कर रही। मैं के बिना तो आप मर ही जाते हैं ना! जब वो मैं निकल गई, मैं आत्मा निकल गई तो ये शरीर कुछ नहीं कर सकता। जब ये शरीर कुछ नहीं कर सकता तो ज़िम्मेदारियां खत्म। बच्चे वहाँ हैं लेकिन आप उनका कुछ नहीं कर सकते। क्योंकि मैं आत्मा इस शरीर से निकल गई। तो सारा दिन सबकुछ करने वाला कौन? मैं।

पेड़ पानी के बिना नहीं रह सकता, गाड़ी पेट्रोल के बिना चल नहीं सकती, मोबाइल चार्ज किए बिना चल नहीं सकता। शरीर खाने बिना नहीं चल सकता लेकिन मैं आत्मा चलती ही जा रही हूँ, करती ही जा रही हूँ लेकिन अब हमें उसका रिजल्ट दिखाई दे रहा है। हम मुरझा जाते हैं, छोटी-छोटी बातों में नाराज, उदास हो जाते हैं। इसको आत्मा का मुरझाना कहेंगे। इसे हम आत्मा की कमजोरी कहेंगे। लेकिन आत्मा कमजोर कब कहेंगे? जब हम नरिश नहीं हैं। हमने बहुत-बहुत सालों से या फिर शायद कई जन्मों से आत्मा का नर्चर(पोषण) नहीं किया है। अगर हम पौधे के ऊपर प्युअर पानी की जगह कोई गलत चीज डाल दें तो वो मर जायेगा। इसी तरह हम आत्मा पर हेल्दी चीज से उसे नर्चर करने की बजाय अगर कोई ऐसी चीजें डालना शुरू कर दें जो उसके लिए सही नहीं है तो उसका भी रिजल्ट दिखाई देने वाला है। हमें नहीं मालूम था कि आत्मा को नर्चर करना है तो भी जीवन चल रही थी। लेकिन अब हमें मालूम हो चुका है कि आत्मा को नर्चर कैसे किया जाता है तो अब भी अगर नहीं करेंगे तो कब करेंगे!



रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'कल्प तरु' परियोजना के तहत पौधारोपण करने के पश्चात् भारतीय राष्ट्रीय महामार्ग प्राधिकरण प्रोजेक्ट डायरेक्टर रविंद्र शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए परियोजना की क्षेत्रीय संयोजिका ब्र.कु. अनिता बहन, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता बहन तथा अन्य भाई-बहनें।



लखनपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज उपसेवाकेन्द्र द्वारा 'बाल व्यक्ति विकास' के तहत कस्तूरबा कन्या छात्रावास रजपुरी में 'सकारात्मक जीवन जीने की कला' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. पुष्पा बहन।



मुम्बई-गामदेवी। नार्कोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो,भारत सरकार,मुम्बई जोनल यूनिट,नशाबंदी मंडल,महाराष्ट्र राज्य द्वारा विश्व नशामुक्ति दिवस पर आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत मैराथन सैकलथान का आयोजन किया गया। मैराथन में सामाजिक न्याय व विशेष सहाय्य विभाग सलाम मुम्बई, ब्रह्माकुमारीज तथा कई महाविद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम में अमित घावटे,क्षेत्रीय निर्देशक,नार्कोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो, डॉ. राजन वेलुकर,अध्यक्ष,नशाबंदी मंडल, श्रीमति वर्षा विलास, ब्र.कु. आशा दीदी तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



गौरीबिदानूर-कर्नाटक। ब्रह्माकुमारीज के 'विश्व प्रकाश भवन' सेवाकेन्द्र की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित समारोह में भव्य बाइक रैली का आयोजन किया गया जिसमें 80 से अधिक ब्रह्माकुमार बाइक राइडर्स शामिल रहे। इस मौके पर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पदमा बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



इंदौर-म.प्र.। नवनिर्वाचित वार्ड क्रमांक 74 विष्णुपुरी नगर की प्रत्याशी श्रीमति सुनीता हार्डिया को ब्रह्माकुमारीज विष्णुपुरी नगर एवं इंदूरपुरी सेवाकेन्द्र की ब्र.कु. पूर्णिमा बहन, ब्र.कु. सीमा बहन व एम.एल. वर्मा द्वारा तिलक, चुन्नी और सौगात भेंट कर सम्मानित किया गया।



राजकोट-रविरत्ना पार्क(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर डॉक्टर्स के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. मयूर मकासना,एमबीबीएस,डीएनबी-नेफ्रोलॉजिस्ट, डॉ. दर्शन भट्ट,ईएनटी सर्जन,ऑन्कोलॉजिस्ट, डॉ. प्रतीक फड्डू,डेंटल सर्जन, डॉ. मौली गणत्रा,एमडी, डॉ. भार्गव राणपारिया,रेडियोलॉजिस्ट, डॉ. निराली मैम,फिजियोथैरेपिस्ट, ब्र.कु. नलिनी बहन, डॉ. अक्षय पटेल आदि उपस्थित रहे।

परमात्म ऊर्जा



आवाज से परे जाना और ले जाना आता है? जब चाहे आवाज में आये, जब चाहे आवाज से परे हो जाएं, ऐसे सहज अभ्यासी बने हो? यह पाठ पक्का किया है? विजयी रत्न बने हो? किस पर विजयी बने हो? सर्व के दिलों पर विजय प्राप्त कर सकते हो? जैसे बापदादा के इस कर्तव्य के गुण का यादगार यहाँ है वैसे बाप के समान विजयी बने हो? सर्व के ऊपर विजयी बने हो? आपके ऊपर और कोई विजयी बन सकता है? पास विद ऑनर अर्थात् संकल्प में भी फेल न हो ऐसे बने हो? माया को चैलेंज है कि प्रतिज्ञा करने वालों का खूब प्रैक्टिकल पेपर ले। सामना करने की शक्ति सदैव अपने में कायम रखना है। जो अष्ट शक्तियाँ सुनाई थी वह अपने में धारण की हैं? ज्ञानमूर्त, गुणमूर्त दोनों ही बने हो?

माया को अच्छी तरह से सदाकाल के लिए विदाई दे चले हो? अपनी स्थूल विदाई के पहले माया को विदाई देनी है। माया भी बड़ी चतुर है। जैसे कोई-कोई जब शरीर छोड़ते हैं तो कभी-कभी सांस छिप जाता है। और समझते हैं कि फलाना मर गया लेकिन छिपा हुआ सांस कभी-कभी फिर से चलने भी लगता है। वैसे माया अपना अति सूक्ष्म रूप भी धारण करती है। इसलिए अच्छी तरह से जैसे डॉक्टर लोग चेक करते हैं कि कहाँ श्वास छिपा हुआ तो नहीं है ऐसे तीसरे नेत्र से अच्छी तरह से अपनी चेकिंग करनी है। फिर कभी ऐसा बोल नहीं निकले कि इस बात का तो हमको आज ही मालूम पड़ा है। इसलिए बापदादा पहले से ही खबरदार होशियार बना रहे हैं। क्योंकि प्रतिज्ञा की है, किस स्थान पर प्रतिज्ञा की है? किसके आगे की है? यह सभी बातें याद रखना है। प्राप्ति तो की

लेकिन प्राप्ति के साथ क्या करना होता है? प्राप्ति की लेकिन ऐसी प्राप्ति की जो सर्व तृप्त हो जायें। जितना तृप्त बनेंगे इतना ही इच्छा मात्रम अविद्या होंगे। कामना के बजाय सामना करने की शक्ति आयेगी। पुरानी वृत्तियों से निवृत्त हुए - ये सभी पेपर के क्वेश्चन हैं, जो पेपर प्रैक्टिकल होना है। अपने को पूर्णतया क्लियर और डॉन्ट केयर करने की शक्ति अपने में धारण की है? स्वयं और समय दोनों की पहचान अच्छी तरह से स्पष्ट मालूम हुई? यह सभी कुछ किया व कुछ रहा है? क्या आप समझते हैं कि सभी बातों की प्राप्ति कर तृप्त आत्मा बन पेपर हॉल में जाने के लिए हिम्मतवान, शक्तिवान बना हूँ? अच्छा अब प्रैक्टिकल पेपर की रिजल्ट देखेंगे जो पास विद ऑनर की रिजल्ट दिखायेंगे उन्होंने को बापदादा विशेष याद सौगात देंगे। लेकिन पास विद ऑनर, सिर्फ पास नहीं। अपनी-अपनी रिजल्ट लिख भेजना। फिर देखेंगे कितने बड़े ग्रुप से कितने पास विद ऑनर निकले। लेकिन यह भी देखना कि और जो आप के साथी हैं उन्होंने से भी सर्टिफिकेट लेंगे, तब याद सौगात देंगे। सहज है ना!

जब हो ही हिम्मतवान तो यह क्या मुश्किल है। सदैव यह स्मृति रखना कि मैं विजयी माला की विजयी रत्न हूँ। इस स्मृति में रहने से फिर हार नहीं होगी। सभी ने कहा था कि समाप्ति में पूर्ण रूप से बलि चढ़ ही जायेंगे तो सम्पूर्ण बलि चढ़े? महाबली बने हो कि अभी भी कुछ मरना है? महाबली के आगे कोई माया का बल चल नहीं सकता। ऐसा निश्चय अपने में धारण करना है। रिजल्ट देखेंगे फिर बापदादा ऐसे विजयी रत्नों को एक अलौकिक माला पहनायेंगे।

कथा सरिता

दुनिया में तरह-तरह के लोग होते हैं। कुछ तो ऐसे होते हैं जो स्वयं की कमजोरियों को तो नज़रअंदाज़ कर जाते हैं किंतु दूसरों की कमजोरियों पर उपहास करने को सदा तत्पर रहते हैं। वास्तविकता का अनुमान लगाये बिना ये दूसरों की कमजोरियों पर हँसते हैं और अपने तीखे शब्दों के बाणों से उन्हें ठेस पहुँचाते हैं, किंतु जब उन्हें यथार्थ का तमाचा पड़ता है तो सिवाय ग्लानि के उनके पास कुछ शेष नहीं बचता।

एक गाँव में एक अंधा व्यक्ति था। वह रात में जब भी बाहर जाता, एक जली हुई लालटेन हमेशा अपने साथ रखता था।

एक रात वह अपने दोस्त के घर से भोजन कर अपने घर वापस आ रहा था। हमेशा की तरह उसके हाथ में एक जली हुई लालटेन थी। कुछ शरारती



लड़कों ने जब उसके हाथ में लालटेन देखी, तो उस पर हँसने लगे और उस पर व्यंग्य बाण छोड़कर कहने लगे, “अरे, देखो-देखो अंधा लालटेन लेकर जा रहा है। अंधे को लालटेन

हो भाईयों, मैं तो अंधा हूँ, देख नहीं सकता। मेरी दुनिया में तो सदा से अंधेरा रहा है। मुझे लालटेन का क्या काम? मेरी आदत तो अंधेरे में ही जीने की है लेकिन आप जैसे आँखों वाले लोगों को तो अंधेरे में जीने की आदत नहीं होती। आप लोगों को अंधेरे में देखने में समस्या हो सकती है। कहीं आप जैसे लोग मुझे अंधेरे में देख ना पायें और धक्का दे दें, तो मुझ बेचारे

सोच-विचार कर ही बोलें

का क्या काम?”

का क्या होगा? इसलिए ये लालटेन आप जैसे लोगों के लिए लेकर चलता हूँ ताकि अंधेरे में आप लोग मुझ अंधे को देख सकें।”

अंधे व्यक्ति की बात सुनकर वे लड़के शर्मसार हो गए और उससे क्षमा मांगने लगे। उन्होंने प्रण किया कि भविष्य में बिना सोचे-समझे किसी से कुछ नहीं कहेंगे।

सीख : कभी किसी को नीचा दिखाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए और कुछ भी कहने से पूर्व अच्छी तरह सोच-विचार कर लेना चाहिए।

बहुत समय पहले की बात है। एक राज्य में एक राजा का राज था। वह अक्सर सोचा करता था कि मैं राजा क्यों बना? एक दिन एक प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने उसने अपने राज्य के बड़े-बड़े ज्योतिषियों को आमंत्रित किया। ज्योतिषियों के दरबार में उपस्थित होने पर राजा ने यह प्रश्न उनके सामने रखा, “जिस समय मेरा जन्म हुआ, ठीक उसी समय कई अन्य लोगों का भी जन्म हुआ होगा। उन सबमें मैं ही राजा क्यों बना?”

इस प्रश्न का उत्तर दरबार में उपस्थित कोई भी ज्योतिषी नहीं दे सका। एक बूढ़े ज्योतिषी ने राजा को सुझाया कि राज्य के बाहर स्थित वन में रहने वाले एक महात्मा कदाचित् उसके प्रश्न का उत्तर दे सकें। राजा तुरंत उस महात्मा से मिलने वन की ओर निकल पड़ा। जब वह महात्मा के पास पहुँचा तो देखा कि वो अंगारे खा रहे हैं। राजा घोर आश्चर्य में पड़ गया। किंतु उस समय राजा की प्राथमिकता अपने प्रश्न का उत्तर प्राप्त करना था। इसलिए उसने इधर-उधर की कोई बात किये बिना अपना प्रश्न महात्मा के सामने रख दिया।

प्रश्न सुन महात्मा ने कहा, “राजन! इस समय मैं भूख से बेहाल हूँ। मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता। कुछ दूरी पर एक पहाड़ी है, उसके ऊपर एक और महात्मा तुम्हें मिलेंगे। वे तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे देंगे। तुम उनसे जाकर मिलो।”

राजा बिना समय व्यर्थ किये पहाड़ी पर पहुँचा। वहाँ भी उसके आश्चर्य की सीमा नहीं रही, जब उसने देखा कि वहाँ एक महात्मा चिमटे से नोंच-नोंचकर अपना ही मांस खा रहे हैं। राजा ने उनके

समक्ष वह प्रश्न दोहराया। प्रश्न सुनकर महात्मा बोले, “राजन! मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता। मैं भूख से तड़प रहा हूँ। इस पहाड़ी के नीचे एक गाँव है। वहाँ 5 वर्ष का एक बालक रहता है। वह कुछ ही देर में मरने वाला है। तुम उसकी मृत्यु पूर्व उससे प्रश्न का उत्तर प्राप्त कर लो।”

राजा गाँव में जाकर उस बालक से मिला। वह बालक मरने की कगार पर था। राजा का प्रश्न सुन वह हँसने लगा। एक मरते हुए बालक को हँसता देख राजा चकित रह गया। किंतु वह शांति से अपने पूछे गए प्रश्न के उत्तर की प्रतिक्षा करने लगा।

बालक बोला, “राजन! पिछले

अंगारे खा रहा है। दूसरे भाई ने कहा कि तुम्हें भोजन दे दूंगा, तो क्या मैं अपना मांस नोचकर खाऊंगा? और आज वह अपना ही मांस नोचकर खा रहा है। साधु ने जब मुझसे भोजन मांगा, तो मैंने कहा कि तुम्हें भोजन देकर क्या मैं भूखा मरूंगा? और आज मैं मरने की कगार पर हूँ। किंतु तुमने दया दिखाते हुए उस साधु को अपना भोजन दे दिया। उस पुण्य का ही प्रताप है कि इस जन्म में तुम राजा बने।”

इतना कहकर बालक मृत्यु को प्राप्त हो

गया। राजा को अपने प्रश्न का

कर्म का प्रत्यक्ष फल



जन्म में मैं, तुम और वो दो महात्मा, जिनसे तुम पहले मिल चुके हो, भाई थे। एक दिन हम सभी भाई भोजन कर रहे थे कि एक साधु हमारे पास आकर भोजन मांगने लगा। सबसे बड़े भाई ने उससे कहा कि तुम्हें भोजन दे दूंगा तो क्या मैं अंगारे खाऊंगा? और आज वह

उत्तर मिल चुका था। वह अपने राज्य की ओर चल पड़ा।

सीख : जो भी हम भोगते हैं सुख-दुःख वो सब हमारे कर्मों का ही परिणाम होता है। इसलिए हमें अपने अन्दर दया-करुणा का भाव रखना चाहिए। नहीं तो कर्म का फल आगे प्रत्यक्ष होना ही है।

लोगों को खुश करने की इच्छा के अनुरूप हम चलने की कोशिश करते हैं। हमेशा मन में रहता, कोई नाराज न हो जाये, कोई नाखुश न हो जाये। ऐसा करने पर हम खुश रह सकते हैं! नहीं ना। आज हम सबके सामने बड़ी चुनौती है कि कोई नाराज न हो जाये। पर ऐसा व्यवहार करना संभव है? टटोलने पर उत्तर 'ना' ही है ना! उदाहरण के तौर पर किसी को लाल रंग बहुत पसंद है तो किसी को

में ताकत ही नहीं है। तो डॉक्टर की यह राय हमारे लिए सही है! नहीं ना। क्योंकि हमारे में वह संस्कार ही नहीं है। हमारे में वो ताकत ही नहीं है जो हम इतनी अच्छी राय को पूरा कर सकें। स्थूल चीजों में जब हम हर चीज को पूरा नहीं कर सकते, तो भावनात्मक रूप से हम हरेक की इच्छाओं को पूरा कर सकते हैं! क्योंकि हरेक की इच्छाएँ, कामनाएँ अलग-अलग हैं। आज तक हम ये मानते

देते रहे, तो उसमें भी वे संस्कार भर जायेंगे। हम सब अलग-अलग हैं ये विचार और हरेक की क्वालिटीज, हरेक की शक्तियाँ अलग-अलग हैं, उसे स्वीकार करते हुए हम खुश रह सकते हैं। जैसे गुलदस्ते में अलग-अलग रंग के फूल होते हैं, तो गुलदस्ता अच्छा लगता है। वैराइटी को हमने एक साथ सजाया तो सभी को वो अच्छा लगेगा। इसी तरह हम सभी की विविधताओं को स्वीकार करें,

एक्सेप्ट करें न कि एक्सपेक्ट



सफेद रंग। तो सफेद रंग हमें बहुत पसंद है तो हम यह चाहते हैं कि दूसरों को भी सफेद रंग पसंद हो। ये कैसे हो सकता है! दोनों अपनी-अपनी जगह सही हैं। उसकी च्वाइस लाल रंग है जबकि हमारी च्वाइस सफेद। पर हम चाहते हैं कि वो भी सफेद रंग ही पसंद करे, ये तो संभव नहीं है ना! क्योंकि दोनों अलग हैं और दोनों की सोच अपनी-अपनी है। उनकी इच्छाएँ अपनी हैं जबकि हमारी इच्छाएँ अपनी हैं। तो ऐसे में सबकी इच्छाओं को पूर्ण करना, सबकी एक्सपेक्टेन्स को पूरी करना, ये तो संभव नहीं है ना! क्योंकि उनकी नेचर अलग है और मेरी नेचर अलग है। इसीलिए इस विचार को लेकर यदि चलेंगे तो न हम अपने को खुश रख पायेंगे और न ही दूसरों को।

डॉक्टर हमें सलाह देता है कि 5 कि.मी. चलना आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। राय तो बहुत अच्छी है किंतु हमारी कैपेसिटी तो पाँच कदम चलने की भी नहीं है, हमारे

आए कि हमारे अनुरूप ही दूसरे भी चलें परंतु हमें अपनी यह सोच, ये मान्यताएँ बदलनी पड़ेंगी। हाँ, यहां हमें एक चीज करनी होगी, दूसरों की एक्सपेक्टेन्स को पूरा करने के बजाए हमारी जो एक्सपेक्टेन्स है उसी को हम पूरा कर सकते हैं। क्योंकि हमारा संस्कार अपना है और पहले हमें खुद को खुश रखना जरूरी है। ये संस्कार हमें नहीं छोड़ना है। तब तो ये संस्कार दूसरों को हम दे सकेंगे।

दूसरी बात, सबकी नेचर अलग-अलग है। किसी में सहन करना, किसी में ईमानदारी-वफादारी है तो किसी में धैर्यता। तो ऐसे में हम दूसरों से एक्सपेक्ट करें कि वो भी ईमानदार हो, वफादार हो, ये तो संभव नहीं है ना! हाँ, हम उसे एक्सेप्ट करें, वो जो है, जैसा है, उसमें जो विशेषताएँ हैं उसको स्वीकार करें और हमारे में जो विशेषताएँ हैं वो हम बनाए रखें। वो संस्कार अगर हम उसमें देखना चाहते हैं तो बिना उससे कुछ इच्छा रखे हम अपनी विशेषता, अपने गुण

एक्सेप्ट करें। ऐसा नज़रिया हम बनायें, तो खुश रहना और औरों को खुश करना, ये हम कर पायेंगे। क्योंकि आत्माएँ अलग-अलग हैं। हरेक यूनिक हैं, हरेक का रोल अलग-अलग है। हम अपने मन को शक्तिशाली बनाने के लिए मेडिटेशन को अपने जीवन का हिस्सा बनायें। रोज अपनी विशेषताओं का, योग्यताओं का चिंतन करें, देखें, तो वो हमारे में भरती जायेंगी और हममें ताकत बढ़ती जायेगी। जैसे बैटरी को चार्ज करना है तो पावर हाउस से कनेक्ट करते हैं ना, तो यदि हमें भी शक्तिशाली बनना है तो हमें भी पावर हाउस परमात्मा से स्वयं को कनेक्ट करना होगा। कहते हैं ना कि एनर्जी हाईयर टू लोअर की तरह फ्लो होती है। बस करना इतना ही है कि हमें स्वच्छ हृदय से, साफ मन के तार उनसे जोड़ना है। तो शब्दों 'एक्सपेक्टेन्स और एक्सेप्ट' को हम सही-सही अर्थ में जान जायें तो हम सदा खुश रह सकते हैं। और यही हमारी नेचर भी है।



शिर्नोर-गुज. किसान कल्प वृक्ष योजना के अंतर्गत खेतीबाड़ी उत्पादन बाज़ार समिति, एग्रीकल्चर मार्केटिंग प्रॉड्यूस मार्केटिंग कमेटी के बैनर तले आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज को आमंत्रित किये जाने पर स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. धरती बहन ने शाश्वत यौगिक खेती के बारे में बताया। तत्पश्चात् कार्यक्रम में उपस्थित माननीय कैबिनेट मंत्री प्रदीप सिंह परमार, सामाजिक न्याय अधिकारिता गुजरात को ईश्वरीय सौगात भेंट कर संस्थान की सेवाओं से परिचित कराया। इस मौके पर सी.आर. पाटिल, प्रदेश अध्यक्ष भाजपा, सचिन पटेल, सभापति, एपीएमसी, भार्गव भट्ट, प्रदेश महामंत्री बीजेपी, अक्षय भाई, एमएलए, शिर्नोर, मधु भाई श्रीवास्तव, एमएलए, बाघोडिया आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



कांकेर-छ.ग. ब्रह्माकुमारीज के ग्राम विकास प्रभाग एवं स्थानीय सेवाकेन्द्र द्वारा कलेक्ट्रेट तिराहा में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर स्थानीय विधायक शिशुपाल शोरी, नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमति सरोज ठाकुर, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष जितेंद्र सिंह ठाकुर, जेल अधीक्षक खोमेश मंडावी, मुख्य नगर पालिका अधिकारी दिनेश यादव, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रामा दीदी, बस्तर बंधु के संपादक सुशील कुमार शर्मा तथा ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



सांगरेडु-तेलंगाना। ब्रह्माकुमारीज द्वारा एम.एन.आर. ऑडिटोरियम में आयोजित 'डी-एडिक्शन अवेयरनेस' सेशन के दौरान ब्र.कु. सुमंगला दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. सुनंदा दीदी, बीदर सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. डॉ. सचिन परब, मोटिवेशनल स्पीकर व चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े 870 छात्र-छात्राओं सहित एमबीबीएस, होम्योपैथी, नर्सिंग, प्रोफेसर्स तथा एमएनआर एकेडमिक ऑफिसर्स उपस्थित रहे।



अलीराजपुर-म.प्र. वृक्षारोपण करते हुए जिलाधीश राघवेंद्र जी, अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश दिनेश देवड़ा, ब्र.कु. नारायण भाई, ब्र.कु. माधुरी बहन तथा अन्य।



बिजावर-छतरपुर(म.प्र.)। 'कल्प-तरु' अभियान के तहत बुंदेलखंड उच्च माध्यमिक स्कूल के परिसर में वृक्षारोपण किया गया। इस मौके पर स्कूल के प्राचार्य मुकेश खरे, अध्यापक अशोक गुप्ता, ब्र.कु. शिल्पा बहन, शिक्षकगण तथा छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।



वटवा-अहमदाबाद(गुज.)। ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र के रजत जयंती समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए दशरथ पारेख, ओनर, यूनिवर्सल इंजीनियरिंग जीआई डीसी वटवा, डॉ. शशिप्रकाश क्षत्रिय, एमबीबीएस, एमडी, मधुमेह विशेषज्ञ, उर्जा मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, ब्र.कु. नेहा बहन, संचालिका मणिनगर सबजोन, ब्र.कु. अमर बहन, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, डॉ. मुकेश पटेल, डायरेक्टर, महादानी स्पीरिचुअल फाउंडेशन, ब्र.कु. तारा बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. जागृति बहन, ईसनपुर तथा क्षेत्र के अन्य गणमान्य लोग।



रीवा-झिरिया(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित वैज्ञानिकों एवं अभियंताओं की कार्यशाला में पानीपत हरियाणा से मोटिवेशनल स्पीकर राजयोगी ब्र.कु. भारत भूषण भाई, नेशनल कोऑर्डिनेटर, साइंटिस्ट एंड इंजीनियरिंग विंग, सेवानिवृत्त प्रमुख अभियंता आर.के. सिंह, राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, विंध्य के लोकप्रिय गीतकार नीलेश श्रीवास्तव, ब्र.कु. प्रकाश भाई, सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता शेर बहादुर सिंह परिहार, सेवानिवृत्त अधीक्षक यंत्री अनुपम श्रीवास्तव, डॉ. मुकेश यंगल, अध्यक्ष, रिएक्ट संस्थान, शाहिद परवेज़, सिद्धार्थ श्रीवास्तव, डॉ. हरीश चंद्र सिंह, डॉ. दिनेश तिवारी सहित सौ से अधिक वैज्ञानिक एवं अभियंताओं ने भाग लिया।



बेंगलुरु-कुमारा पार्क(कर्नाटक)। आध्यात्मिक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए आरटीएन डी. रुक्मांगदा बाबू, डायरेक्टर, मैत्रेयी, सहयोग, आरआईडी 3190 एवं पूर्व ट्रेज़रर, के.एस. ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस, नादोजा बी.के. सुमित्रा, प्रसिद्ध कन्नड़ प्लेबैक सिंगर, चैयरपर्सन राजयोगिनी ब्र.कु. सरोजा दीदी, उपक्षेत्रीय निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज कुमारा पार्क, डॉ. हेमा प्रसाद, सिंगर, म्यूज़िक डायरेक्टर, एंकर, प्रेसिडेंट-संगीत गंगा, आयोजक राजयोगी ब्र.कु. गणेश, आर्ट एंड कल्चर विंग, संगम तीर्थ बेंगलुरु तथा अन्य।

दुनिया में एक बात बहुत प्रचलित है कि अगर अगले जन्म में बहुत सुखी और शांत रहना है, सबकुछ बहुत अच्छा करना है तो दान-पुण्य जरूर करना चाहिए। लेकिन आज इस समाज में बहुत ऐसे लोग हैं जो दिन-रात जिसको कहते हैं धर्माऊ निकालते हैं अपने लिए कि हर दिन का कोई जो भी साहूकार हैं या कोई बड़े-बड़े बिजनेसमैन हैं, अपनी-अपनी दुकान में धर्माऊ निकालते हैं कि इसको हम दोगे तो दूसरे दिन से ज़्यादा से ज़्यादा हमारे गल्ले में आयेगा। ऐसी बहुत सारी मान्यतायें लोग हर रोज अपने दैनिक जीवन में कर रहे हैं, लेकिन एक है दान करना, दूसरा है पुण्य करना। दान सब लोग कर रहे हैं। पैसा ज़्यादा है तो कम्बल बांट रहे हैं या फिर कुछ चादरें बांट रहे हैं, या फिर कुछ खाने की चीजें दे रहे हैं, लेकिन पुण्य सभी नहीं कर रहे हैं क्योंकि दान से भी पुण्य का बहुत महत्त्व है। दान एक इच्छित व्यक्ति को भी दिया जा रहा है और एक अनिच्छित व्यक्ति को भी दिया जा रहा है।

आजकल तो ये एक परम्परा-सी चली आ रही है कि आपको इतना परसेंट निकालके दान जरूर करना चाहिए ताकि अगले जन्म में आपको सही मिले, लेकिन पुण्य की परिभाषा बहुत ही अलग है। पुण्य कर्म निःस्वार्थ सेवा भाव का कर्म है। पुण्य कर्म दिखावा नहीं होता है लेकिन दिल से होता है। दान में क्या होता है दान में ज़्यादातर जितने भी व्यक्ति हैं, जो भी दान करते हैं चाहे चेअर(कुर्सी) है, टेबल(मेज) है जो भी दान की वस्तु है उस पर अपना नाम लिखावा देते हैं। माना दिखावा भी है। दिल से करने वाले बहुत कम हैं, लेकिन पुण्य कर्म या पुण्य करना उसे कहा जाता है कि

पुण्य आत्मा कैसे बन सकते हैं...!!!

जब किसी को आवश्यकता है और उस समय उस व्यक्ति का सहयोगी बनना, उस व्यक्ति के लिए कर्म करना और पुण्य कर्म जब करते हैं और भूल जाते हैं। जैसे एक स्थिति जिसको हम फरिश्तेपन की स्टेज कहते हैं कि जैसे एक फरिश्ता आया, कर्म किया और भूल गया। और व्यक्ति उसको ढूँढ रहा है कि पता नहीं ऐसा कौन-सा व्यक्ति है कि जो आया और काम करके चला गया। समय पर मुझे सहयोग मिल गया। उसे कितनी दुआएं मिल जाती हैं।

जैसे कई बार होता है कि हमने कर्म किया फिर मुख से बात करके धन्यवाद कर दिया और आप खुश हो जाते हैं, लेकिन पुण्य कर्म करने के बाद अनेक आत्माओं के दिल की जो दुआएं प्राप्त होती हैं वो बड़ी

गुप्त होती हैं। एक तो इसका प्रत्यक्ष फल भी मिलता है और अप्रत्यक्ष फल भी मिलता है। पुण्य आत्मा जो होगी उसकी दृष्टि, वृत्ति औरों की दुआओं के रूप में अनुभव करायेंगी। एक उदाहरण है कि जैसे कोई व्यक्ति दान करता है तो आप उसका चेहरा, चलन देखो एक अभिमान नज़र आयेगा, और जहाँ भी जायेगा उसका वर्णन जरूर करेगा, लेकिन पुण्य आत्मा सदा संतुष्ट होगी। उसके चेहरे पर प्रसन्नता और संतुष्टता होगी। जो अभिमान और अपमान से बेफिक्र होगा वो पुण्य आत्मा है। पुण्य का खाता, उसकी निशानी क्या होगी अगर

आपका पुण्य का खाता जमा है या पुण्य आपने किया है इसकी सबसे बड़ी निशानी है व्यर्थ खत्म हो जायेगा। इसका मतलब क्यों व्यर्थ हमारे अन्दर चल रहा है, क्योंकि हमने पुण्य नहीं किया, अनावश्यक चीजों पर खर्च किया, लेकिन जिसको जिस शक्ति की जरूरत है उसे उस समय पर सहयोग नहीं दिया तो हमारा व्यर्थ बहुत चलता है, और व्यर्थ हम ब्राह्मणों के लिए बहुत खतरनाक स्थिति मानी जाती है। जो हम परमात्मा के ज्ञानी बच्चे हैं अगर हमें सम्पूर्ण बनना है तो

एक उदाहरण है कि जैसे कोई व्यक्ति दान करता है तो आप उसका चेहरा, चलन देखो एक अभिमान नज़र आयेगा, और जहाँ भी जायेगा उसका वर्णन जरूर करेगा, लेकिन पुण्य आत्मा सदा संतुष्ट होगी। उसके चेहरे पर प्रसन्नता और संतुष्टता होगी।

हमेशा सुखदाई बनना बहुत जरूरी है। जैसे दुनिया में एक कहावत है ना कि जो हम देते हैं हमें वो ही मिलता है। अगर हम सुख देंगे तो सुख मिलेगा, तपस्वी अर्थात् तो तपस्वी व्यक्ति कौन है, पुण्य आत्मा बनने वाला कौन है जो थोड़ा भी दुःख स्वीकार न करे। ये ज्ञान क्या कहता है जिस ज्ञान को हमने लिया है ये ज्ञान कहता है कि अगर हमको थोड़ा भी दुःख महसूस होता है किसी भी बात से, थोड़ा भी दुःख बहुत ज़्यादा तकलीफ देता है तो इसका मतलब इतने सारे जन्मों में हमने दुःख देखा ही नहीं, बहुत कम देखा है। मतलब परिवर्तन करना उसे

कहा जाता है जो हर समय सुख फील करे, जो ग्लानि को एक्सेप्ट (स्वीकार) कर ले, माना ग्लानि को प्रशंसा समझ ले वो पुण्य आत्मा है। गाली देने वाले को जो दुनिया में कहा जाता है कि गले लगाना, ये बहुत मुश्किल टास्क है, बहुत मुश्किल कार्य है। लेकिन इसे वही कर पायेगा जिसका पुण्य का खाता जमा होगा।

एक होता है कि सामने वाला कुछ भी कर रहा है लेकिन उसको देखने के बाद हमारी स्थिति कैसी होती है!

दुनिया में बहुत सारी कहानियां प्रचलित हैं कि पुण्य का प्रत्यक्ष फल हर आत्मा की दुआएं हैं। तो जिन आत्माओं ने बहुत सारी दुआएं जमा की हैं ना उनको पुरुषार्थ करने के लिए कोई एफर्ट (मेहनत)

नहीं करना पड़ता। उनका पुरुषार्थ नैचुरल होता है, नवीन होता है। हम सबके पुरुषार्थ में इतनी दिक्कत क्यों हो रही है, क्योंकि हमारा पुण्य का खाता बहुत कम है। पुण्य आत्मा की निशानी क्या है, जो हम नहीं चाहते, जो हम करना नहीं चाहते और हम चाहते हैं कि ऐसा हो भी ना वो व्यक्ति अगर ऐसा न कर पाये तो समझ लो कि वो व्यक्ति पुण्य आत्मा की श्रेणी में है। मतलब हमारे संकल्प में इतना बल आ गया, इतने लोगों की दुआएं मिल गई कि अगर कोई कर्म करना नहीं चाहता इतने लोगों की दुआओं के संकल्प से मैं नहीं करूँ। तो इसका

मतलब मैंने जीत पा ली, मेरे पास पुण्य का खाता जमा है। सारा दिन बैठकर आप इस बात को चेक करके देखो कि अगर मेरे अन्दर बहुत ज़्यादा संकल्प नहीं



ब.कु. अनुज, दिल्ली

चल रहे हैं बहुत कम चल रहे हैं, श्रेष्ठ चल रहे हैं और इतना श्रेष्ठ चल रहे हैं कि जिसका कोई पारावार नहीं, तो श्रेष्ठ संकल्प ही हमारी स्थिरता की निशानी है। क्योंकि श्रेष्ठ संकल्प में गति नहीं होती। परमधाम श्रेष्ठ संकल्प है, विश्व की बादशाही श्रेष्ठ संकल्प है, स्वर्गिक सुख श्रेष्ठ संकल्प है। लेकिन जिनको याद नहीं रहता ना तो उनकी दुआएं बहुत कम हैं, पुण्य का खाता बहुत कम है। जब पुण्य का खाता बढ़ेगा तो दुःख हमें सुख फील करायेंगा। अगर कोई हमको तकलीफ भी देता है क्योंकि देखो इस दुनिया में निशानी है कि जिसका मन खाली है, उसी को गाली फील होती है। जिसका मन भरा हुआ है उसको गाली फील नहीं होती।

तो मन में अगर परमात्म श्रम है, परमात्मा की बातें हैं, परमात्मा का आह्वान है, परमात्मा का भाव भरा हुआ है तो चाहे कोई कुछ भी कहे वो हम सबके लिए है। तो जितना पुण्य का खाता उतनी संतुष्टता, उतनी खुशी, उतना बल और उतना पराक्रम हमारे चेहरे से, हमारी चलन से दिखाई देगा। तो हे आत्मन्! पुण्य का खाता जमा करो। और पुरुषार्थ में ईजिनेस(सरलता) लाओ। सहज पुरुषार्थी सिर्फ पुण्य के खाते से बना जा सकता है।

उपलब्ध पुस्तकें

जो आपके जीवन की बदल दें



प्रश्न : मेरा नाम अनुपमा है। पिछले चार साल से विशेष करके मुझे सिर में और पूरे शरीर में दर्द रहता है। मैंने अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग डॉक्टरों से भी इलाज करवाया, उन्होंने हाई से हाई डोज दी लेकिन फिर भी किसी भी प्रकार की कोई राहत नहीं मिली है। मैं पढ़ भी नहीं पाती और कई बार तो बिस्तर से उठने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं होती, क्या इसका राजयोग के माध्यम से कोई समाधान हो सकता है?

उत्तर : बिल्कुल हो सकता है क्योंकि पिछले ही दिनों में राजयोग के माध्यम से दो केस ठीक होते देखे हैं। उन्हीं अनुभव के आधार से मैं आपको राय दूंगा कि माइग्रेन ऐसी बीमारी है आपने ठीक कहा कि आप उठ भी नहीं पाते, इसमें ऐसा होता है। पढ़ते ही सिर भारी हो जाता है। इसलिए आपको कॉन्फिडेंस रखना है और आशावादी हो जायें, आपके दिन सुनहरे आ जायेंगे। 21 दिन के लिए बहुत अच्छा प्रयोग ये करें पहले और फिर जरूरत पड़े तो दुबारा 21 दिन के लिए करेंगे। एक तो आपको पानी चार्ज करके पीना है, एक गिलास पानी लें और पानी को देखकर सात बार ये संकल्प करेंगी कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ ताकि आपके ब्रेन को, आपकी पूरी बॉडी को प्युअर एनर्जी जाये। ऐसा पानी आप पाँच बार अवश्य पी लें। दूसरा है रात को सोते समय सब्कोन्शियस माइंड में आपको ये संकल्प भरना है जैसे नींद आ रही हो तो पाँच बार ये संकल्प करें कि मेरा माइग्रेन बिल्कुल ठीक हो गया है। मैं सम्पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ, मैं बहुत एक्टिव हूँ। मेरी बुद्धि परफेक्टली काम कर रही है। ऐसे अच्छे संकल्प सब्कोन्शियस माइंड को देंगे तो सब्कोन्शियस माइंड इन्हें कमांड के रूप में स्वीकार कर लेगा। और सब्कोन्शियस माइंड विशेष रूप से रात में जब मनुष्य सोता है एक सर्जन के रूप में काम करता है। इसलिए सोने से पहले सब्कोन्शियस माइंड को ये कमांड देने का बड़ा महत्त्व है। विशेष रूप से रात में हमारे सब्कोन्शियस माइंड में बहुत ज़्यादा हीलिंग पॉवर होती है। ये हमारे डॉक्टर्स को भी जानना चाहिए और पेशेंट्स को भी। ये कमांड हमें सोने से पहले अपने सब्कोन्शियस माइंड को देनी है। तो सारी रात में वो काम करेगा। और तीसरी चीज़ है जैसे कि हम सभी को बताते हैं कि ब्रेन को एनर्जी देनी है। उसी तरह से हाथ को मलते हुए तीन बार याद करेंगे कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। क्योंकि सारी बीमारियां ब्रेन से ही होती हैं। अगर ब्रेन परफेक्ट है तो सारी बीमारियां अपने आप ही

ठीक हो जायेंगी। तीन बार याद करके मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ हाथों को ब्रेन पर रखेंगे और सोचेंगे कि ये एनर्जी मेरे ब्रेन को जा रही है। मेरा ब्रेन परफेक्ट हो रहा है। मेरा माइग्रेन बिल्कुल ठीक हो रहा है। ऐसा दस मिनट सवेरे और दस मिनट शाम को। अगर आप तीसरी बार भी करना चाहें तो बहुत अच्छा होगा। आपको इसमें टाइम देना ही होगा। और जैसे ही आप ठीक होने लगेंगी तो पंद्रह-पंद्रह मिनट मेडिटेशन भी करना शुरू करें। जब आप ये सब करेंगी तो आपका जीवन बहुत अच्छा हो

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य



जायेगा। और अगर आप मेडिसिन भी लेना चाहती हैं तो आप होम्योपैथी मेडिसिन भी ले सकती हैं क्योंकि होम्योपैथी में इसका इलाज सम्भव है। मेडिसिन भी ले लें और आप साथ में ये प्रयोग भी कर लें।

प्रश्न : मेरी उम्र 17 साल की है। मैं बॉक्सर बनना चाहता हूँ और देश का प्रतिनिधित्व करना चाहता हूँ, लेकिन समस्या ये है कि मेरी हाइट कम है। मैं अपनी हाइट कम से कम 6 फीट बढ़ाना चाहता हूँ, मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : आजकल टेबलेट भी मिल रही हैं बहुत, लेकिन उनका तो कितना प्रभाव है ये तो डॉक्टर्स ही बता सकते हैं। वो खानी चाहिए या नहीं खानी चाहिए। कई बार ऐसी चीजों का प्रभाव बहुत बुरा हो जाता है। हार्मोन्स पर बुरा इफेक्ट पड़ता है। हाइट तो बढ़ जायेगी लेकिन ब्रेन गड़बड़ कर जायेगा। क्योंकि हाइट बहुत महत्वपूर्ण नहीं, ब्रेन बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन फिर भी आप एक विज्ञान बनायें आपकी आयु अभी 17 वर्ष ही है तो आप क्या करें कि अपने दीवार के सामने अपना एक चित्र बना दें। और उसमें आप अपनी हाइट लिख दें कि ये मेरी हाइट 5.8 फीट है या 5.9 फीट है। आप रोज उठते ही उसे देखें और ये लक्ष्य रखें कि

अगले 5-6 साल के बीच मेरी हाइट ये हो जायेगी। सोने से पहले और उठते ही इसे सब्कोन्शियस माइंड में उतार दें। न केवल देखें बल्कि अपने पूरे विश्वास से सब्कोन्शियस माइंड में पाँच बार ये संकल्प भी करें कि अगले 5-6 साल में मेरी लम्बाई 5.9 फीट हो जायेगी, तो फिर सब्कोन्शियस माइंड इसे रिसीव कर लेगा। सब्कोन्शियस माइंड बहुत पॉवरफुल होता है। वो इस चीज़ में कार्य करने लगेगा। इस बारे में डॉक्टर से भी सलाह लेनी चाहिए और एक्सरसाइज जो भी फिजियोथेरेपी आपको सजेस्ट करें वो भी आपको कर लेना चाहिए। और आप रोज राजयोग का भी अभ्यास करेंगे क्योंकि उससे आत्मा पॉवरफुल होती है और मन भी। मन पॉवरफुल होने से सब्कोन्शियस माइंड पॉवरफुल होता है। तो जब सब्कोन्शियस माइंड पॉवरफुल होता है तो वो और पॉवरफुली एक्ट करने लगता है। तो जो राजयोग करते हैं उन्हें जानना चाहिए कि सब्कोन्शियस माइंड बहुत पॉवरफुल होता है। उसका हर फील्ड में फायदा उठायें। और मैं आपको फिर बताना चाहूँगा कि हाइट इतनी महत्वपूर्ण नहीं होती लेकिन जो स्कूल हैं, योग्यतायें हैं वो महत्वपूर्ण होती हैं। आप भले अपनी हाइट पर ध्यान दें लेकिन आपको अपनी कला पर सबसे ज़्यादा ध्यान देना है, प्रैक्टिस पर देना है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल





व्यर्थ में अपने अनमोल समय को व्यर्थ न गवाएं

मैं आप सभी को एक थॉट दे रहा हूँ वो है अपने इस जीवन की वैल्यू को समझना। जीवन बहुत वैल्यूबल चीज है, और ब्राह्मणों का संगमयुगी जीवन, भगवान के द्वारा मिला हुआ अलौकिक जीवन उसके तो कहने ही क्या! इसमें तो हम अपने श्रेष्ठ भाग्य का निर्माण कर सकते हैं। जिस श्रेष्ठ दिशा में अपने को ले जाना चाहें, जा सकते हैं। जो मुक्ति के जिज्ञासु हैं वो मुक्ति की ओर बढ़ सकते हैं। जो जीवनमुक्ति में हाइअर स्टेटस(ऊँचा पद) प्राप्त करना चाहते हैं तो उनके कदम उसकी ओर बढ़ते जायेंगे।

सूरज अकेला आसमान में चमकता है, पूरे संसार को रोशन करता है। अकेली इष्ट देवी, अकेली महान आत्मा जग के कल्याण के लिए बहुत बड़ी भूमिका निभाती है।

अपने जीवन को वैल्यू देना, सभी अपने से पूछें कि हम अपने को वैल्यू दे रहे हैं क्या? दुनिया में भी, संसार में लौकिक जीवन व्यतीत करने वालों के लिए भी, जीवन बहुत मूल्यवान चीज होती है। कई लोग जीवन की वैल्यू को न समझके इसके क्षणों को व्यर्थ गंवाते रहते हैं। और कई परेशान होकर जीवन का अंत करने का ही सोचते रहते हैं। कई तरह की बीमारियां बढ़ती रहती हैं। जीवन को वैल्यू देंगे, बहुत महत्वपूर्ण बात है। और जीवन में दो चीजें बहुत महत्वपूर्ण हैं वो हैं हमारे संकल्प, थॉट, विचार और हमारा समय। कई लोगों को समय की वैल्यू नहीं होती है। पर हमें अपने समय को वैल्यू देनी है। ऐसा समय संगमयुग का समय, भगवान से मिलन का समय, सर्व खजाने प्राप्त करने का समय बहुत भाग्यवान और पुण्य आत्माओं को ही प्राप्त हुआ है।

रियलाइज कर लें, एक्सेप्ट कर लें कि हम बहुत भाग्यवान हैं। बहुत पुण्य आत्मायें हैं। जो स्वयं भगवान हमारे घर में आ गया है। हमारी पालना करने आ गया है। कितनी वैल्यू है इस जीवन की, कितनी वैल्यू है हमारी एकाग्रता की। बहुत ध्यान देना है। क्योंकि अगर व्यर्थ बहुत है, अगर आप अपने घर में रहते हैं व्यर्थ संकल्प चल रहे हैं तो आपके घर में निगेटिव वायब्रेशन फैलते जा रहे हैं। उन निगेटिव वायब्रेशन से अनेक समस्याएं पैदा हो रही हैं। कहेंगे बच्चे सुनते नहीं, बच्चे पढ़ाई नहीं करते, बच्चे फोन पे रहते हैं, बच्चे इधर-उधर लग गये हैं। जिम्मेदार आपके घर के वायब्रेशन भी हैं। ये आपकी जिम्मेदारी है आपके घर के वायब्रेशन को पॉवरफुल बनाना। व्यर्थ होगा तो वायब्रेशन तो कमजोर ही हो जायेंगे। आप ये नहीं सोचिए कि मैं अकेला, मैं अकेली मैं क्या करूँ? नहीं। सूरज अकेला आसमान में चमकता है, पूरे संसार को रोशन करता है। अकेली इष्ट देवी, अकेली महान आत्मा जग के कल्याण के लिए बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। वायब्रेशन बहुत पॉवरफुल, बहुत पॉजिटिव करेंगे।

अगर आपका व्यर्थ बहुत चलता है तो उसका इफेक्ट(प्रभाव) आपकी बाँडी पर पड़ता है। टेंशन होती है, चिंतायें होती हैं, या परेशानियां होती हैं। जिनके कारण बहुत व्यर्थ चलता है। बाँडी पर उसका सीधा इफेक्ट आता है। वो देखने में आता है। अगर हमें स्वस्थ रहना है। अगर हमें अपने घर के माहौल को प्यार और खुशी से भरपूर रखना है। अगर अपने चित्त को शांत करना चाहते हैं तो आज एक संकल्प कर लें कि हम व्यर्थ को समाप्त कर लें। कल्प का अन्तिम जीवन, अन्तिम जन्म व्यर्थ में न बीते यही हमारी बुद्धिमानी होगी, यही हमारी समझदारी होगी।

तो आइए हम सभी मिलकर आज से दृढ़ संकल्प करें, बाबा को अपने प्यार में बांध लें। वो जो हमें संकल्प दे रहा है उनमें रमण करें। तो जीवन भी लाइटफुल हो जायेगा। जीवन आनंद से भर जायेगा। और संगमयुग का एक-एक पल हमें कुछ देने वाला हो जायेगा। हमें महसूस होगा कि हमारा जीवन देवताओं से भी श्रेष्ठ है।



मैंगलुरु-कर्नाटक। ब्रह्माकुमारीज द्वारा पुलिस पर्सनल्स के लिए आयोजित 'वैल्यू एजुकेशन ट्रेनिंग प्रोग्राम' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए एन. शशि कुमार, कमिश्नर ऑफ पुलिस, श्रीमति गीता कुलकर्णी, असिस्टेंट कमिश्नर ऑफ पुलिस, ट्राफिक, श्रीमति भारती, पुलिस इंस्पेक्टर, ब्र.कु. विश्वेश्वरी बहन, सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. स्नेहा बहन तथा ब्र.कु. रेवती सनिल। कार्यक्रम में लगभग 60 वुमेन पुलिस पर्सनल्स ने भाग लिया।



बाटवा-गुज.। 'कल्प तरु' परियोजना के अंतर्गत बगीचे व गवर्नमेंट हाई स्कूल के मैदान में नगर पालिका प्रमुख राजू वाधवानी, सिंधी समाज के प्रमुख दयाल भाई, डॉ. सुरेजा, डॉ. रामचंद्राणी तथा व्यापारियों सहित ब्र.कु. मधु बहन, ब्र.कु. चंपा बहन व अन्य भाई-बहनों ने पौधा रोपण किया।



अम्बिकापुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'कल्प तरु' प्रोजेक्ट के अंतर्गत असकला ग्राम में पौधारोपण किया गया। इस मौके पर सेवानिवृत्त मुख्य वन संरक्षक जगदीश चन्द्राकर, उद्यान विभाग ग्राम सेवक संतोष कुमार सिंह, सरपंच असकला श्रीमति गौरी सिंह, उपसरपंच असकला चोलेश्वर जी, जनपद सदस्य जगेश्वर पैकरा, पूर्व सरपंच राजेश्वर पैकरा, सेवानिवृत्त पटवारी नागिर जी, ग्राम प्रमुख गंधीर पैकरा, पत्रकार अम्बिकावाणी देवी सिंह जी, सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी तथा अन्य भाई-बहनों उपस्थित रहे।



छतरपुर-पेटेक टाउन(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के 'कल्प तरु' परियोजना के अंतर्गत पौधा रोपण करते हुए ब्र.कु. संध्या बहन तथा अन्य।



बिजावर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के 'कल्प तरु' परियोजना के अंतर्गत नेताजी सुभाष चंद्र बोस बालिका छात्रावास में 'एक पेड़ लगाओ जीवन बचाओ' के तहत आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में अपर सत्र न्यायाधीश निशा गुप्ता, अपर सत्र न्यायाधीश प्राची गुप्ता, वन विभाग अधिकारी अशोक कुमार तिवारी, वन विभाग के अन्य स्टाफ, पत्रकार आमिल खान, नेताजी छात्रावास की वार्डन रजनी गौड़, ब्र.कु. प्रीति बहन, ब्र.कु. रचना बहन, ब्र.कु. काजल बहन, ब्र.कु. शिल्पा बहन तथा अन्य भाई-बहनों ने पौधा रोपण किया।



पुणे-दिधी। 'कल्प तरु' अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति बहन, सांगवी सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संजीवनी बहन, नगरसेविका निर्मला मनोज गायकवाड़ तथा बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनों मौजूद रहे।



अंबाजोगाई-महारा.। ब्रह्माकुमारीज के नवनिर्मित भवन 'आनंद सरोवर' के उद्घाटन अवसर पर ब्रह्माकुमारीज की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, संजय बनसोडे, राज किशोर मोदी, पृथ्वीराज साठे, ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. सोमप्रभा बहन, ब्र.कु. महानंद बहन, ब्र.कु. गोपाल भाई आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



जबलपुर-विजय नगर(म.प्र.)। 'कल्प-तरु' अभियान के अंतर्गत अंतरराज्यीय बस टर्मिनस में पौधारोपण करते हुए सचिन विश्वकर्मा, सीईओ, अंतरराज्यीय बस टर्मिनस, शीतल उपाध्याय, डिप्टी सीईओ, ब्र.कु. विमला दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु. पूजा बहन, सेवाकेन्द्र संचालिका तथा अन्य भाई-बहनें।



शाजापुर-म.प्र.। तहसील अवंतीपुर बड़ोदिया के लोकप्रिय नवनिर्वाचित सरपंच अभिषेक पटेल को बधाई देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पूनम बहन व ब्र.कु. दीपक भाई।



बिलासपुर-तालापारा(छ.ग.)। केंद्रीय जेल में आयोजित कार्यक्रम में कैदियों को 'संस्कार परिवर्तन' विषय पर बताते हुए ब्र.कु. भगवान भाई, मा. आबू। साथ हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रमा बहन, जेल अधीक्षक एस.एस.तिग्गा तथा अन्य। इस मौके पर ब्र.कु. पंचम भाई, ब्र.कु. उदय भाई आदि मौजूद रहे।

हैदराबाद शहर में अलौकिक दिव्य एवं भव्य समर्पण समारोह

12 कन्याओं ने मानवता के उत्थान हेतु किया जीवन समर्पित



हैदराबाद-तेलंगाना। ब्रह्माकुमारीज शांति सरोवर के ग्लोबल पीस ऑडिटोरियम में आयोजित दिव्य एवं भव्य अलौकिक समर्पण समारोह में संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने कहा कि अपने जीवन को दिव्य बनाकर समस्त मानव जाति को दिव्य बनाने के लिए परमार्थ अपना जीवन समर्पित कर देना एक महान कर्तव्य है। इन 12 कन्याओं ने अपनी हिम्मत और स्वेच्छा से ईश्वरीय सेवा में अपना जीवन समर्पित करने का जो संकल्प लिया, यह बेहद सराहनीय है। ओम शांति रिट्रीट सेंटर गुरुग्राम की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि इन कन्याओं ने

तन-मन-धन से ईश्वरीय सेवा में अपना जीवन अर्पण करके समाज के सामने एक

स्वेच्छा से ये मार्ग चुना कि हमें अपने चाल चलन चेहरे से अलौकिक जीवन की



मिसाल कायम की है। इस मौके पर शांति सरोवर की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कुलदीप दीदी ने कहा कि इन कन्याओं ने

खुशबू सारे जग में फैलानी है। वास्तव में ये बहुत-बहुत बधाई के पात्र हैं। मैं इस दिव्य कार्य के लिए इन कन्याओं को बहुत-

अलौकिक समर्पण के दौरान...

दिव्य संगीत समारोह में प्रसिद्ध गायक हरीश मोयल एवं ब्र.कु. दामिनी, अहमदाबाद ने दिव्य गीतों की प्रस्तुति देकर समारोह को और दिव्य व अलौकिक बनाया। साथ ही कुमारियों ने नृत्य की अनुपम प्रस्तुति दी।

12 कन्याएं शिव को हुई समर्पित

ब्र.कु. अनुपमा, ब्र.कु. अश्विनी, ब्र.कु. भव्या स्पंदना, ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. लावण्या, ब्र.कु. मधुवनी, ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. प्रियंका, ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. सिंधुजा, ब्र.कु. श्रव्या व ब्र.कु. विष्णुप्रिया ने किया परमार्थ जीवन समर्पित।

बहुत शुभकामनाएं देती हूँ कि आप अपने लक्ष्य में अवश्य सफल हों। ब्रह्माकुमारीज सिकंदराबाद की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू बहन व ब्रह्माकुमारीज के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने भी अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि दुनिया में लोग घरबार छोड़कर सन्यास लेते हैं। परंतु ये परमात्मा शिव की एक अद्भुत विधि-विधान है कि ये रहेंगे तो संसार में ही लेकिन जैसे कि कमल रहता है कीचड़ में। और परमात्मा के निर्देशन में जीवन जीते हुए दुनिया में परमात्मा का संदेश देंगी और जन-जन के जीवन को दिव्यता की ओर प्रेरित करेंगी।

पाँचवें पुण्य स्मृति दिवस पर प्रेमलता दीदी को संतों-महंतों ने किया याद



देहरादून-उत्तराखण्ड। प्रेमलता बहन के पाँचवें स्मृति दिवस पर आयोजित सन्त सम्मेलन में स्वामी गणेशनाथ योगी जी महाराज, अध्यक्ष, पीर प्रेम नाथ धाम आश्रम, हरिद्वार ने कहा कि प्रेम बहन जी दया एवं करुणा की मूर्ति थीं। उनका जीवन हम सब के लिए अनुकरणीय

है। महामण्डलेश्वर स्वामी 1008 सोमेश्वरानंद गिरि जी महाराज, श्री शंकराचार्य आश्रम, हरिद्वार ने कहा कि प्रेम बहन जी मेरी माँ समान थीं। उन्होंने मनुष्यों की सोच को बदला है जिससे पूरे विश्व में विचार क्रांति आई है। स्वामी परमानंद दास जी महाराज, मधुबन

आश्रम, हरे कृष्णा, ऋषिकेश ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान से एक आध्यात्मिक क्रांति निकल चुकी है जो सारे संसार को प्रेम दया करुणा और शांति का संदेश दे रही है। महामण्डलेश्वर स्वामी संतोषानन्द देव जी महाराज, अध्यक्ष, अवधूत मण्डल आश्रम, हरिद्वार ने कहा कि प्रेम दीदी से हर वर्ष रक्षाबंधन के दिन सन्त संगोष्ठी में राखी बंधवाते थे। उनका वह वात्सल्य मुझे आज भी याद आ रहा है। मेरे मन-मस्तिष्क पर उनके प्रेम की अमिट छाप है। ब्रह्माकुमारीज देहरादून की क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी ने राजयोगिनी प्रेमलता दीदी के साथ का अपना अनुभव साझा करते हुए कहा कि दीदी ने मुझे हर सेवा कार्य को सही रीति से करते हुए परमात्मा के कार्य को आगे बढ़ाने की विधि सिखाई। हर कदम पर मेरा मार्गदर्शन करती रहीं। मौके पर योगी

प्रेमलता दीदी के पाँचवें पुण्य स्मृति दिवस पर...

- संत समागम में पहुंचे महामण्डलेश्वर
- उनके दिव्य जीवन के साझा किये संस्मरण
- उनका जीवन समस्त मानवता के लिए प्रेरणा

अखिलेशानंद जी महाराज, रमता योगी, स्वामी राममुनि जी महाराज, अध्यक्ष सन्त मण्डल आश्रम, हरिद्वार, महंत शम्भू दास जी महाराज, अध्यक्ष, मानस मंदिर, हरिद्वार, डॉ. स्वामी अमृतानंद गिरि जी महाराज आदि सभी संतों ने प्रेमलता बहन को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

आगे बढ़ने की होड़ में अपनी शक्ति व अस्तित्व को न भूलें महिलायें

सम्मेलन >> • महिला सम्मेलन में पहुंची देशभर की महिलायें • तीन दिनों तक सशक्तिकरण पर चर्चा • डायलॉग एवं कार्यशालाओं का आयोजन

शांतिवन-आबू रोड(राज.)। राजस्थान सोशल वेलफेयर बोर्ड की अध्यक्षा डॉ. अर्चना ने कहा कि महिलाओं में शक्ति का पुंज है। परंतु आगे बढ़ने की होड़ में उन्हें अपनी शक्ति और अस्तित्व को नहीं भूलना चाहिए। वे ब्रह्माकुमारीज के मनमोहिनीवन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में आयोजित महिला सम्मेलन को सम्बोधित कर रही थीं। भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु और मध्यम इंटरप्राइजेज मंत्रालय के राष्ट्रीय बोर्ड की सदस्य रश्मि मिश्रा ने कहा कि मुझे यहां सबको देखकर लग रहा है कि परमात्मा का आशीर्वाद हमें मिल रहा है। अपना अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा कि मैंने जब ब्रह्माकुमारीज में आकर मेडिटेशन करना शुरू किया तब मुझे पता चला कि अध्यात्म



का मतलब क्या है। जब तक हम स्वयं आध्यात्मिकता से जुड़ेंगे नहीं, बच्चों को घर में सही और गलत की शिक्षा नहीं देंगे, तब तक हमारा देश और समाज किसी भी चीज

में सफल नहीं हो पायेगा। एनेस्थीसिया की प्रोफेसर डॉ. उषा किरण ने कहा कि कलियुग का परिवर्तन कर स्वर्ग की राह ब्रह्माकुमारी बहनें ही दिखाएंगी। फिल्म समीक्षक और

लेखक भावना सोमैया ने कहा कि मैं ऐसा मानती हूँ कि एजुकेशन, मनी और सर्वसेस एम्पावरमेंट नहीं है। एम्पावरमेंट सेल्फ कॉन्फिडेंस है और सबसे ज्यादा आपको

शिक्षा दे रही है। महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी ने कहा कि एक दैवी सृष्टि बनाने के लिए महिलाओं का स्पीरिचुअल एम्पावरमेंट बहुत जरूरी है क्योंकि स्पीरिचुअलिटी केवल लेक्चर देने की चीज नहीं। जब स्पीरिचुअल पौधे का निर्माण किया जाता है तो पौधे को समय पर पानी देना और खराब चीजों से निराई करना जरूरी है। ब्रह्माकुमारीज के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि नारी शक्ति ही विश्व को बदल सकती है। यह हमारे संस्थान में माताओं-बहनों ने कर दिखाया है। कार्यक्रम में महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. शारदा बहन, मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. डॉ. सविता बहन समेत कई लोगों ने अपने विचार रखे।